ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

मार्गशीर्ष-पौष, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ८ अंक ४ दिसंबर 2014

संपादक : सिमरजीत सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार २
संपादकीय ३
अनुनय-विनय (कविता) ४
चमकौर साहिब के युद्ध के बाद दशम पातशाह . . . ५
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी और . . . ८
-डॉ. जगजीत कौर
श्री अनंदपुर साहिब तथा चमकौर साहिब . . . १३
-डॉ. नवरत्न कपूर
साका सरहिंद १७
-डॉ. अमृत कौर
माता गुजरी जी २०
-स. गुरप्रीत सिंघ
अल्ला यार ख़ान योगी एवं उनकी अद्वितीय रचना २४
-सिमरजीत सिंघ
रंघरेटे-गुरु के बेटे : भाई जीवन सिंघ २७
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
भाई जीवन सिंघ शहीद २८
-स. गुरदीप सिंघ
शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ ३०
-स. बिकरमजीत सिंघ
जन आवन का इहै सुआउ ३२
-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सेवा की महानता ३६
-डॉ. रछपाल सिंघ
बाल-कल्याण और बाल-साहित्य ३७
-श्री विनोद चंद्र पांडेय
महाकवि भाई संतोख सिंघ (कविता) ४०
-स. करनैल सिंघ (सरदार पंछी)
कविताएं ४१
-श्री प्रशांत अग्रवाल
गुरबाणी चिंतनधारा : ८६ ४२
-डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा ४७

गुरबाणी विचार

दोसु न दीजै काहू लोग ॥ जो कमावनु सोई भोग ॥
आपन करम आपे ही बंध ॥ आवनु जावनु माइआ धंध ॥१॥
ऐसी जानी संत जनी ॥ परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥१॥ रहाउ ॥
तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ हैवर गैवर चालनहार ॥
राज रंग रूप सभि कूर ॥ नाम बिना होइ जासी धूर ॥२॥
भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ संगि नाही रे सगल पसारी ॥
सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ साकत इव ही करत बिहानी ॥३॥
हरि का नामु अंम्रितु कलि माहि ॥ एहु निधाना साधू पाहि ॥
नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥४॥ *(पन्ना ८८८)*

रामकली राग में श्री गुरु अरजन देव जी उपरोक्त उच्चारण किए शबद के माध्यम से जनसाधारण को जीवन-कर्म के व्यवहार की सत्यता बता रहे हैं। गुरु जी का कथन है कि मनुष्य को अपने किए कर्मों (जिनसे जीवन में दुख उत्पन्न होते हैं), परेशानियों का दोष किसी अन्य को नहीं देना चाहिए। (वास्तविकता है कि) मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। अपने कर्मों के अनुसार ही मनुष्य (माया के) बंधनों में जकड़ा रहता है। इन्हीं (माया के) बंधनों के कारण उसका जन्म-मरण का चक्कर चलता रहता है। जिन मनुष्यों के हृदय में पूर्ण गुरु के वचनों, उपदेशों द्वारा (आध्यात्मिक) प्रकाश हो गया है उन्हीं मनुष्यों ने संत रूप में आकर (अर्थात् आम मनुष्य से संत की पदवी प्राप्त कर) इस जीवन-युक्ति को समझ लिया है।

पंचम गुरु जी का मनुष्य के लिए फरमान है कि हे भाई! शरीर, धन, स्त्री ये सभी (माया के रूप) नाशवान पसारे हैं। बढ़िया घोड़े, बढ़िया हाथी, ये भी नाशवान हैं। इस संसार की बादशाहियां, रंग-तमाशे, सुंदर रूप-आकार सभी कूड़ हैं, नाशवान हैं। केवल परमात्मा का नाम ही स्थिर है। परमात्मा के नाम के बिना हर वस्तु अंततः मिट्टी में मिल जाने वाली है, नाशवान है। जिन सांसारिक पदार्थों का अहंकार कर मनुष्य गलत रास्ते पर चलता हुआ भटकता रहता है वे सब पदार्थ यहीं रह जाने वाले हैं, इनमें से साथ कुछ नहीं जाएगा। जीवन में आने वाली खुशी-गमी में विचरण करता हुआ ही शरीर बूढ़ा हो जाता है। साकत अर्थात् परमात्मा से टूटे हुए मनुष्य का जीवन यूं ही (भटकना में) व्यतीत हो जाता है।

शबद की अंतिम पंक्तियों में उपदेश है कि परमात्मा का प्रिय नाम ही इस संसार में अमृत (समान) है; आत्मिक जीवन देने वाला है। यह (परमात्मा के नाम का) खज़ाना गुरु के पास है अर्थात् गुरु की शरण में जाने से ही परमात्मा के नाम का सिमरन करने की सीख मिलती है। जिस मनुष्य पर गुरु की प्रसन्नता होती है, परमात्मा की प्रसन्नता होती है, वही मनुष्य यह जानने की समझ रखता है कि परमात्मा का निवास घट-घट में है, हर शरीर में है।

कहने से तात्पर्य कि जिस मनुष्य ने सच्चे गुरु की शरण में जाकर परमात्मा के नाम-सिमरन की प्राप्ति की है, सांसारिक पदार्थों से मोह भंग किया है, वही जान सका है कि परमात्मा दुनिया में हर जगह व्याप्त है।

शहीदों की कौम के शहीद बच्चे

विश्व भर में जुल्म, सितम तथा लोगों को तंग-परेशान करके अपनी ताकत का लोहा मनवाने वालों की कोई कमी नहीं है। ये लोग बड़े-बड़े ओहदों पर पहुंचकर भी अपना अहंकार नहीं छोड़ते। ये अपनी प्रत्येक नाजायज़ बात को मनवाने हेतु हर प्रकार का जुल्म कर गुज़रते हैं, जो रहती दुनिया तक उनकी झोली में बदनामी के अतिरिक्त कुछ नहीं डालता। दूसरी तरफ इन ज़ालिमों का मुकाबला करने एवं लोगों की भलाई हेतु कोई न कोई ज़रूर उठ खड़ा होता है। उसके साथ जुल्म से तंग आए लोग भी उठ खड़े होते हैं। धीरे-धीरे जत्था बनता जाता है। ज़ालिम उनको मार मुकाने लगता है, मगर यह जत्था निरंतर बढ़ता ही जाता है। ज़ालिम के पास सबसे बड़ा हथियार यातनाओं भरी मृत्यु का डर देना होता है, परंतु नेक लोक-पुरुष भलाई हेतु यातनायें सहन करते-करते मृत्यु प्राप्त करके शहीद का रुतबा हासिल कर लेते हैं।

मृत्यु का भय किसी भी मनुष्य से कोई भी काम करवा सकता है। इससे बड़ा भय अन्य कोई नहीं। यह भी सच है कि दुनिया में प्रत्येक वस्तु नाशवान है। जो पैदा हुआ है उसने मरना आवश्यक है, मृत्यु का भय हर एक को सताता है। कोई भी मरना नहीं चाहता। इतिहास पर दृष्टि डालते हुए यह बात भलीभांति स्पष्ट हो जाती है कि बड़े-बड़े राजाओं को अपने आगे झुकाने के लिए उनके विरोधियों ने मृत्यु का ही डर दिया था।

मुगल काल के जुल्म के विरोध में, सच के हक में एक आवाज़ उठ खड़ी हुई जिसके धारक सिक्ख कौम के नाम से दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। आज तक दुनिया भर में सबसे ज्यादा शहीद इसी कौम के हैं। सिक्खों ने हर प्रकार के जुल्म एवं अत्याचार का विरोध करके बदले में शहीदियां प्राप्त कीं। इन शहीदों में दूधमुंहें बच्चों से लेकर ९० वर्षीय बुजुर्ग शामिल हैं। इस कौम को यह शिक्षा गुरु साहिबान से प्राप्त हुई जिससे मृत्यु का भय जड़ से ही इनके मनों से उठ गया।

मुगल काल में बादशाह औरंगज़ेब के शासन-काल के दौरान गैर-मुसलमानों पर जो जुल्म एवं अत्याचार हुए उनको पढ़-सुनकर पत्थर-दिल भी रो उठता है। इस काल के समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साहिबज़ादों की शहीदी बेमिसाल है। इसको जुल्म की इंतहा ही कहा जा सकता है। साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी एवं साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी चमकौर की जंग में बड़ी संख्या की मुगल सेना से जूझते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ जी एवं साहिबज़ादा फ़तहि सिंघ जी को सरहिंद के ज़ालिम सूबा वज़ीर खां ने घोर यातनायें देते हुए दीवारों में चिनवाकर शहीद कर दिया। दुनिया भर में हुई शहादतों के इतिहास में यह बे-मिसाल घटना है जिस पर सिक्ख कौम को अत्यंत फख्र है।

शहीदी के समय छोटे साहिबज़ादों की उम्र ८ तथा ५ वर्ष थी। इन नन्ही ज़िंदों ने इतना बड़ा साका किया जिसकी मिसाल कहीं भी नहीं मिलती। इतनी दिलेरी की शिक्षा इनको विरासत में प्राप्त हुई थी, जिससे मुगल राज्य की ज़ड़ें हिल गईं।

मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि मनुष्य के शख़्सी विकास पर उसके घरेलू वातावरण का गहरा असर होता है, इसलिए हमें मौजूदा समय में भी अपने घरों का वातावरण ऐसा सृजित करना चाहिए जिससे बच्चे अपनी विरासत के साथ जुड़े रहें। आज हमारे समक्ष अजीब किस्म की समस्याएं मुंह आड़े खड़ी हैं। बच्चों में पतितता तथा निजी-प्रस्ती का रुझान बढ़ रहा है। नशाखोरी से बचना एवं बच्चों को बचाना समय की प्रमुख आवश्यकता बन गई है। इस सम्बंध में सारा का सारा दोष बच्चों के सर थोप खुद मुक्त हो जाना ठीक नहीं। बच्चों की शख़्सियत को निखारने में शिक्षण संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं, माता-पिता व अध्यापक बराबर के जिम्मेवार हैं। दूसरी तरफ मंडीकरण, पैसा कमाने की अंधी दौड़ तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जो नये युग की ज़रूरत बनकर उभर रहे हैं, भी हमारी विरासत को कमज़ोर करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। अगर इस पर समय रहते अंकुश न लगाया गया तो सांप के निकलने के बाद लकीर को पीटने का कोई फायदा नहीं होगा। हमें अपने-अपने बच्चों को साहिबज़ादों की शहादत की साखियां खुद सुनानी होंगी। बच्चों को नित्तनेमी बनाकर उनको गुरबाणी के अर्थों को समझाना पड़ेगा एवं पूर्वजों की उदाहरणें उनके समक्ष पेश करनी होंगी। बेगानी भाषाओं का मोह त्यागकर सबसे पहले अपनी भाषा का ज्ञान, अपनी विरासत का ज्ञान देना अति आवश्यक बनाना पड़ेगा।

यदि हम सभी निश्चय करके अपने फर्जों को समझकर सत्य-मार्ग पर चलने का प्रण कर लें तो हमारा समाज आज भी खुशहाली की मंज़िल छू सकता है। बच्चे ही हमारा सबसे अमूल्य धन हैं। इनके समक्ष बड़ी से बड़ी दौलत एवं जायदाद तुच्छ है। अगर हमारे बच्चे गुणवान होंगे तो हमारी जायदाद को दोगुना-चौगुना कर देंगे, यदि नहीं तो हमारी जायदाद को नष्ट कर देंगे।

अनुनय-विनय

विमल बुद्धि, निर्मल हृदय, शीलपूर्ण व्यवहार। हस्त वाणी से शुभ रहें, यह वर दो करतार !
अर्चना-वंदन हर समय, हर दम तुमरा ध्यान ! देह-धर्म के साथ दो, साईं यह वरदान !
साईं दो मन को मेरे, भटकन से विश्राम ! आंखों को दो देखना, वाणी को दो नाम !
साईं अपने दास का, इतना कर दो काम ! आती-जाती सांस में गूंजे आपका नाम !
हे करुणामय दीजिए, ऐसी बुद्धि, विवेक ! हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश हों एक !
खुली आंख से गुरु दिखे, बंद आंख से नूर ! और सभी कुछ रखिए, मेरी नज़र से दूर !
आंखें दो अकिंचन हैं, मांगें भिक्षा-दान ! इक में शक्ति कर्म की, दूजे में दो ज्ञान !
ऐसा कुछ कर दीजिए, जब तक तन में ताप ! खुली आंख से गुरु दिखे, बंद आंख से आप !
मैं क्या हूं, मैं कौन हूं, क्या है मेरे हाथ ? अपना नाम जपाई लो, करि अनुकंपा नाथ !

-डॉ. नरेश, १६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९ (हरियाणा)

चमकौर साहिब के युद्ध के बाद दशम पातशाह का जीवन-सफर

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सरवंशदानी, खालसा पंथ के सृजक, महाज्ञानी, युगदृष्टा, दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन पर विहंगम दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि उनका संपूर्ण जीवन-सफ़र अधर्म, अन्याय, जुल्म, अत्याचार के विरुद्ध जूझते हुए, संघर्ष करते हुए धर्म, न्याय, सच, मज़लूमों की रक्षा करने में ही व्यतीत हुआ। अपने पूर्ववर्ती नौ सिक्ख गुरु साहिबान की भांति दशम पातशाह भी दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले उच्च कोटि के महान् समाज-सुधारक, क्रांतिकारी युगपुरुष हुए हैं।

चमकौर साहिब का युद्ध : चमकौर साहिब का युद्ध विश्व का एक विचित्र युद्ध सिद्ध हुआ है। एक ओर अस्त्रों से लैस बहुत बड़ी सेना तथा दूसरी ओर भूखे-प्यासे व भोथरे हथियारों से लैस चालीस सिक्ख योद्धा मैदाने-जंग में डटे हुए।

मुग़ल सेनाओं ने चमकौर की गढ़ी (हवेली) पर हमला किया। दशम पातशाह के तीरों के सामने मुगल सैनिक बेबस हो गए। एक और विचित्र बात कि सभी शेष युद्धों से ज्यादा तीर गुरु जी ने यहां पर चलाए। अपना ज़ोर न चलता देख मुग़लों ने सांझा हमला करने की ठानी। नाहर ख़ान, ग़ैरत ख़ान और ख्वाजा मुहम्मद मरदूद ने तीनों दिशाओं से आक्रमण किया। गुरु जी ने भी तीनों दिशाओं की ओर तीर चलाने शुरू कर दिए। नाहर ख़ान व ग़ैरत खान तो मारे गए, मगर ख्वाजा मुहम्मद मरदूद घायल होकर किले की दीवार से सटकर बच निकला। सफलता न मिलती देख मुग़ल सेनाओं ने किले के दरवाजे पर हल्ला बोल दिया। सिक्ख शूरवीरों ने भी पांच-पांच की संख्या में आकर किले के दरवाज़े को बचाने का फैसला किया। लाखों के विरुद्ध पांच-पांच की अनोखी लड़ाई-- *"सवा लाख से एक लड़ाऊं। तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।"* को चरितार्थ कर रही थी।

विश्व के इस अनोखे युद्ध में विरोधी सेनाओं के विरुद्ध जूझते हुए सिक्ख योद्धाओं के साथ दशम पातशाह के बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी (उम्र १७ वर्ष) तथा बाबा जुझार सिंघ जी (उम्र १४ वर्ष) ने शहादत का जाम पिया। गुरु जी यहीं रहकर युद्ध में जूझना जारी रखना चाहते थे, मगर सिंघों का विचार था कि उनको गढ़ी छोड़ देनी चाहिए। जब गुरु जी न माने, तब सिंघों ने पांच प्यारों का रूप धारण कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को किला छोड़ने का आदेश दे दिया।

गुरु जी माछीवाड़ा में : चमकौर की गढ़ी छोड़ने के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चलते हुए माछीवाड़ा के जंगल में पहुंचे। फिर उन्होंने वहीं भूमि पर आसन जमा लिया। कुएं की टिंड (गगरा, करीन) में से पानी पिया। दूसरी तरफ सितारों की दिशा में चलते हुए तथा अपने गुरु को तलाशते हुए भाई दया सिंघ जी भी आ पहुंचे। पीछे-पीछे भाई धरम सिंघ जी व भाई मान सिंघ जी भी पहुंच गए। गुरु जी के पैरों में छाले (फफोले) पड़ चुके थे, परंतु उनके नूरानी चेहरे पर वाहिगुरु के प्रति शुक्राने की मुस्कान अब भी ताज़ा थी। यहीं पर गुरु जी

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

ने इस शबद की पंक्तियां प्रभु को संबोधित होकर उच्चारण कीं :

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा ॥
तुधु बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ॥
सूल सुराही खंजरु पियाला बिंग कसाईयां दा सहणा ॥
यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा भट्ठ खेड़िआ दा रहणा ॥

इस बीहड़ जगह पर गुरु जी दो दिन ठहरे। गुरु जी की सेवा हेतु मध्य एशिया से घोड़े खरीदने वाले पठान भाइयों-- भाई नबी ख़ान व भाई गनी ख़ान ने कोई सेवा सौंपने के लिए गुरु जी से निवेदन किया।

औरंगज़ेब को फ़तहिनामा लिखना : गुरु जी ने वहीं से ही औरंगज़ेब को पत्र लिख भेजा। भाई नबी ख़ान एवं भाई गनी ख़ान ने गुरु जी की सेवा की।

उच्च के पीर : भाई नबी ख़ान व भाई गनी ख़ान को पता चला कि मुग़लों की शाही फ़ौज गुरु जी के पीछे लगी हुई है। उन दोनों भाइयों ने गुरु जी को 'उच्च का पीर' बनाया तथा कई मुश्किलों को मिटाते हुए जट्टपुरा में पहुंच गए। जट्टपुरा में भाई राय कल्ला मिला। उसने अपनी सेवा गुरु जी को समर्पित की।

यहीं पर नूरा माही नामक सिक्ख गुरु जी के भेजे जाने पर खोज-ख़बर ले आया कि दोनों छोटे साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी एवं बाबा फ़तहि सिंघ जी को सरहिंद के नवाब वज़ीर ख़ान ने दीवार में ज़िंदा चिनवाकर शहीद कर दिया है। माता गुजरी जी भी वहीं पर शहीद हो चुकी हैं। गुरु जी ने अपने तीर की नोक से दूब के पौधे को उखाड़कर फ़रमाया, "अब यह (मुगल) राज्य जड़ से उखड़ गया समझो!"

दिल को तोड़कर रख देने वाली घटना के बारे में सुनकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक आंसू तक न बहाया, बल्कि प्रभु का धन्यवाद किया।

दीना गांव में : दीना नामक गांव में पहुंचने पर वहां के तीन सगे भाइयों-- भाई शमीरा, भाई लखमीरा और भाई तख़त मल ने गुरु जी की अच्छी आवभगत की। फिर वहां से रुखसत होने के बारे में गुरु जी ने उन्हें बताया। तीनों भाइयों ने अनुनय-विनय कर दशम पातशाह जी को सरहिंद के नवाब द्वारा दी जा रही धमकियों की परवाह न करते हुए अपने पास रुकने के लिए मना लिया।

यहीं पर से गुरु जी ने औरंगज़ेब को विश्व-प्रसिद्ध पत्र 'ज़फ़रनामा' लिखा। उस पत्र में गुरु जी ने औरंगज़ेब की मक्कारियों व दग़ाबाज़ियों की एक लंबी कहानी लिखी। गुरु जी ने बताया कि उन्होंने मज़बूर होकर कृपाण उठाई है। उन्होंने फ़रमाया :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥

श्री मुकतसर साहिब का युद्ध : श्री मुकतसर साहिब का पुराना नाम 'खिदराणे की ढाब' था। 'तवारीख गुरू खालसा' के लेखक ने लिखा है कि मालवा क्षेत्र के बहादुर योद्धा गुरु जी की सेवा में उपस्थित हो गए। माझा क्षेत्र के वे सभी चालीस सिक्ख, जिन्होंने अनंदपुर साहिब में गुरु जी का साथ छोड़ा था, भी गुरु जी की ओर चल पड़े। माता भाग कौर जी द्वारा धिक्कारने व समझाने पर उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ था। अब वे बहुत पछता रहे थे।

दशम पातशाह जी को समाचार मिला कि सरहिंद का वज़ीर ख़ान पीछे लगा हुआ है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खिदराणे की ढाब की ओर जाना उचित समझा और वे फ़ौज लेकर

उधर चल पड़े।

दुश्मनों की सेनाएं नज़दीक आ पहुंची थीं। गुरु जी की सेना ने खिदराणे की ढाब पर कब्ज़ा कर लिया। खुद उन्होंने एक ऊंचे टीले पर मोर्चा संभाल लिया। वहां से सब कुछ स्पष्ट दिखाई देता था। उनके सिक्ख युद्ध करने हेतु तैयार हो गए। घमासान युद्ध हुआ। गुरु जी लगातार तीर चलाते रहे। ढाब पर यानि जलकुंड पर तो सिंघों का ही पूर्ण कब्ज़ा था। तुर्क सेनाओं का मारे प्यास के बुरा हाल हो गया। उन्होंने पीछे लौटना ही ठीक समझा। दशम पातशाह जी ढाब के निकट आ गए। दुश्मन सेनाएं भाग खड़ी हुईं। इस युद्ध में काफी तुर्क सैनिक मारे गए। बेदावा लिखने वाले चालीस सिंघों ने इस युद्ध में अपनी जान की कुर्बानी देकर इतिहास रच दिया। गुरु जी ने उन चालीस शहीदों को 'चाली मुकते' की पदवी प्रदान की। उनके बारे में दशम पातशाह ने फ़रमाया कि "ये चालीस सिंघ जन्म-मरण से मुक्त हुए हैं।" गुरु जी ने उन चालीस शहीद सिंघों का एक बड़ा अंगीठा (सामूहिक चिता) तैयार करवाया तथा उसे अपने हाथों से अग्नि दिखाई। तब से 'खिदराणे की ढाब' 'मुकतसर' के नाम से मशहूर हुई।

श्री मुकतसर साहिब के युद्ध में माता भाग कौर जी ने भी अपनी कृपाण के जौहर दिखाए।

दशम पातशाह श्री दमदमा साहिब में : रुपाणा से गुरु जी साबो की तलवंडी (श्री दमदमा साहिब) में पहुंचे। वहां वे लगभग एक साल रहे। उन्होंने इस स्थान को विद्या का केंद्र बनाया। यहीं पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पुनः संपादित किया। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी को यथायोग्य स्थान पर दर्ज किया। लिखने का महान काम भाई मनी सिंघ जी ने किया। बीड़ साहिब तैयार कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप संपूर्ण किया।

बघोर के स्थान पर गुरु जी को ख़बर मिली कि औरंगज़ेब का अहमद नगर में देहांत हो गया है। इस प्रकार औरंगज़ेब की गुरु जी के साथ भेंट न हो सकी। यदि औरंगज़ेब की यह अंतिम इच्छा पूरी हुई होती तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी धर्म-प्रचार करते हुए बदलते राजनैतिक हालात का जायज़ा भी लेते रहे।

बहादुर शाह और दशम पातशाह का मिलाप : औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद तख़्त के लिए बहादुर शाह (शहज़ादा मुअज़्ज़म) व तारा आज़िम (मुहम्मद अज़ीम) के बीच हुए युद्ध में तारा आज़िम मारा गया। बहादुर शाह की विजय हुई। वह बादशाह बन गया। इस काम में बहादुर शाह ने गुरु जी की मदद ली। बादशाह ने गुरु जी का बहुत सम्मान किया। काज़ियों ने एतराज़ किया। बहादुर शाह ने कहा, "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी धार्मिक अगुआ हैं। इन पर किसी का हुक्म नहीं चल सकता।"

बहादुर शाह बातचीत आगे बढ़ाना चाहता था, मगर वह अपने विरुद्ध हो रही बग़ावत को दबाने में व्यस्त हो गया। गुरु जी अपने स्वभाव के अनुसार धर्म-प्रचार में लगे रहे। गुरु जी कुछ दिन दक्षिण में व्यतीत करना चाहते थे। इसी दौरान वे नांदेड़ पहुंच गए।

माधोदास को सिंघ सजाना : नांदेड़ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मिलाप एक बैरागी साधु माधोदास से हुआ। माधोदास अपनी करामाती शक्तियों के कारण प्रसिद्ध था। उसने इन शक्तियों से गुरु जी को भी प्रभावित करने व डराने की कोशिश की, मगर कामयाब न हो सका। उसने गुरु जी के चरण पकड़ लिए। गुरु

(शेष पृष्ठ १६ पर)

साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी और साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी

*-डॉ. जगजीत कौर**

सिक्ख गुरु साहिबान करामातों, चमत्कारों व करिश्मों में विश्वास नहीं रखते थे और न ही उन्होंने जनमानस को भ्रमित करने के लिए कोई करिश्मा-करामात प्रदर्शित की। साधारण जनमानस को जिस प्रकार उन्होंने शस्त्रबद्ध कर, शस्त्र-शक्ति में उनकी आस्था जगा कर, उनमें निर्भयता, स्वाभिमान, आत्म-बल संचरित कर, आततायी शासन-सत्ता के अन्याय, अत्याचार नृशंस जुल्मों के खिलाफ जूझने की और एक सिंघ की सवा लाख से लड़ने की दब्बू जनमानस में जो आत्म-शक्ति जगाई वह किसी करिश्मे से कम नहीं थी। अंग्रेज विचारक डोरोथी फील्ड के अनुसार, "दबी-कुचली निम्न जातियों, अछूत, निष्क्रिय और आलसी माने जाते हिंदोस्तानियों की कायाकल्प कर उन्हें एक अतीव शक्तिशाली ज़ालिम शासन-सत्ता से टक्कर लेने योग्य योद्धा, सेनानी बना देना निश्चय ही एक करिश्मा था।"

(द रिलीजन ऑफ द सिक्खस, पृष्ठ ३४)

खालसा अकाल पुरख की फौज ॥
प्रगटियो खालसा परमातम की मौज ॥

परमशक्ति के आशीर्वाद से उत्पन्न हुआ खालसा पंथ, जिसमें निम्न से निम्न कही जाती तत्कालीन जातियों के लोग भी सम्मिलित थे, को पहले शस्त्रों की महानता समझाई। बताया कि अस्त्र-शस्त्र महाशक्ति का प्रतीक हैं :

-असि क्रिपान खंडो खडग तुपक तबर अरु तीर ॥
सैफ सरोही सैहबी इहै हमारै पीर ॥३॥
असि क्रिपान खंडो खडगा सैफ तेग तरवारि ॥
रच्छा करो हमरी सदा कवचांतकि करवारि ॥१०॥
(शस्त्र नाम माला)

फिर मौत का मुकाबला करना सिखाया। कहा कि मौत से भागकर कहीं नहीं जा सकते:

जो कहूं काल ते भाज के बाचीअत
ते किह कुंट कहो भजि जईऐ ॥
आगे हूं काल धरे असि गाजत छाजत है जिह
ते नसि अईऐ ॥३६॥१॥ (बचित्र नाटक)

ऐसी निर्भीकता की प्रतिमूर्ति श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के अपने जिगर के टुकड़े बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी थे। अदम्य साहस, शौर्य और असीम युद्ध-कला, कौशल-प्रदर्शन करते हुए केवल १७ और १४ वर्ष की आयु में चमकौर साहिब की गढ़ी में पौष मास, सन् १७०४ की भयंकर शीत व बर्फानी ऋतु में शहादत का जाम पीने वाले ये युवा वीर विश्व-इतिहास में अद्वितीय बलिदान के उदाहरण हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चार साहिबज़ादों में सबसे बड़े बाबा अजीत सिंघ जी थे। इनका जन्म पाउंटा साहिब में २३ माघ, संवत् १७४३ बिक्रमी (सन् १६८७) को हुआ। इनसे छोटे बाबा जुझार सिंघ जी का जन्म बिक्रमी संवत् १७४७ (सन् १६९० ई) में हुआ। अगम्य पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वीर शौर्यवान व्यक्तित्व के अनुकूल अत्यंत बाल्यकाल से ही साहिबज़ादों में वीरोचित व्यक्तित्व का निखार

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

होता दृष्टिगत होने लगा था। प्रेरणा-स्रोत स्वयं महान गुरुदेव जी और दादी मां माता गुजरी जी थीं। सन् १६९९ में जब दशम गुरुदेव जी ने खंडे-बाटे का अमृत तैयार किया तभी दादी मां माता गुजरी जी दोनों बड़े साहिबज़ादों को ले आईं और उन्हें पाहुल संस्कार में दीक्षित किया। दोनों साहिबज़ादों को अस्त्र-शस्त्र के संचालन की शिक्षा अन्य विधिवत शिक्षा के साथ-साथ दी जाती रही। छोटी आयु में ही साहिबज़ादे शस्त्र-संचालन में रुचि दिखाने लगे। गुरु साहिबान ने खुद अपने निरीक्षण में अति दक्ष संचालकों से इन्हें प्रशिक्षित करवाया और लगभग १३-१४ साल की आयु पर पहुंचते ये शस्त्र-संचालन में माहिर हो चुके थे। गुरु-पिता के साथ ज़ालिम आततायियों के विरोध में लड़े गए धर्म-युद्ध में भी भाग लेने लग गए थे। बाबा अजीत सिंघ जी तो युद्ध-कला में इतने माहिर हो गए थे कि ईर्ष्यावश पहाड़ी राजे मुगल सेना के साथ मिलकर सन् १७०० ई से ही श्री अनंदपुर साहिब से टक्कर लेने लग गए थे। ऐसे अवसरों पर गुरु साहिब बाबा अजीत सिंघ जी को ही इन दुश्मनों को सोधने के लिए कुछ वीर सिंघों के साथ भेजा करते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. इन्दू भूषण बैनर्जी श्री अनंदपुर साहिब की पहली जंग का कारण पहाड़ी राजाओं के अंदर का भय बताता है।

खालसा साजना से सिक्ख निर्भय हो रहे थे। श्री अनंदपुर साहिब में सिक्ख वीरों की संख्या बढ़ती जा रही थी। इस बढ़ती शक्ति को पहाड़ी राजा अपने लिए खतरा समझते थे। जातिगत अभिन्नता को वे अपनी संकीर्ण परंपराओं पर आघात अनुभव करते थे। इनमें सबसे मुखर स्वर भीम चंद का था। उसने कहलूर के राजा को भी अपने साथ मिला लिया और स्थानीय गुज्जरों को साथ मिला श्री अनंदपुर साहिब की ओर रवाना किया। गुरु साहिब ने बाबा अजीत सिंघ जी को युद्ध की कमान सौंप इन पहाड़ियों और गुज्जरों का मुंह मोड़ने के लिए भेजा। बाबा अजीत सिंघ जी ने युद्ध में शमशीर के वे करिश्मे दिखाए कि पहाड़ी राजा आश्चर्यचकित रह गए। 'श्री गुर सोभा' के कर्ता कवि सैनापति श्री अनंदपुर साहिब के पहले युद्ध का वर्णन करते हुए बताते हैं :

तब ही बचन पाइ चढ़िओ नगारा बजाइ
सुआर भयो जीत सिंघ जुध के करन को।
सिंघन को साथ लीए मुहरे निशान दीए
बांधिओ है खड़ग सीस दूत के धरन को।१८॥३१५॥

जब बिजली-सी तीव्र गति से *"मारे शमशेरन के लोथनि पै लोथ डारी"* तो ऐसा लगता था :

गाजत सूर महा रन मै धन मै चमकै बिजरी घन नावै।
तारन मै जिम चंद दिपै न छपै रणजीत महा रन पावै।३६॥३३३॥

शमशीर का चमत्कार देख शत्रु-सेना के पांव उखड़ गए :

राजन की सुधि बुधि गई भयो जुध जब जोर।
लरत सिंघ रणजीत तह फउज दई सब मोर ॥३१॥३२८॥

यह युद्ध कई दिन चला, ऐसा डॉ. बैनर्जी भी मानते हैं। कवि सैनापति की साक्षी है :

केतक दिन इह भांत करि भयो जुध संग्राम ।
प्रबल भयो तह खालसा राजन मानी आन ॥३७॥३३४॥

राजाओं की पराजय से बाबा अजीत सिंघ जी की शक्ति-समर्थता में सिक्खों का विश्वास और प्रबल हुआ। गुरुदेव जी भी बाबा अजीत सिंघ जी को ही दायित्व सौंप प्रसन्न होते। इसी तरह एक अन्य अवसर पर होशियारपुर का रहने वाला ब्राह्मण देवदास गुरु साहिब के पास यह फरियाद लेकर आया कि वह अपनी पत्नी

का मुकलावा (गौना) करा डोली लेकर आ रहा था तो बसी गांव के पास वहां के सरदार जाबर खां ने जबरदस्ती उसकी पत्नी को छीन लिया है। वहां के हाकिम, चौधरी, किसी ने उसकी सहायता नहीं की। गुरुदेव जी ने दो सौ सवार दे बाबा अजीत सिंघ जी को ब्राह्मण के साथ भेजा। बाबा अजीत सिंघ जी ने सोए हुए पठानों को जा दबोचा। उन्हें मार-ज़ख्मी कर डाला (ब्राह्मण की नवविवाहिता की डोली) श्री अनंदपुर साहिब ले आए। गुरुदेव जी ने ब्राह्मण देवदास को उसकी पत्नी सौंपी। जाबर खां को तीर से मारा। इस प्रकार बाबा अजीत सिंघ जी निर्भय योद्धा के रूप में प्रसिद्ध हो रहे थे। सिक्खों की बढ़ती ताकत को पहाड़ी राजा अपने लिए ख़तरा मानते थे।

सन् १७०० से १७०२ ई के बीच कुछ शांति बनी रही। इसके बाद छिटपुट लड़ाइयां होती रहीं। १७०४ ई में पहाड़ी राजाओं ने गुज्जर, रंगड़ व मुगल सेना की सहायता लेकर श्री अनंदपुर साहिब के किले को घेर लिया। सिंघों के जत्थे किले से बाहर निकलते, बड़ी बहादुरी से शत्रु-सेना को मार शहीद होते। किले के अंदर रसद-दाना-खाद्य समाप्त हो गया। मुगलों ने पानी के स्रोत भी काट दिए। अब साहसी सिक्ख रात या प्रात: उठ कुछ पानी-रसद लाते, कभी बच निकलते, कभी शहीद हो जाते। चालीस सिक्खों के हौंसले टूटने लगे। वे बेदावा लिखकर दे साथ छोड़ भाग गए। बचे सिक्खों ने माता गुजरी जी को प्रार्थना की कि वे गुरु जी को समझाएं कि किला छोड़ दें। मुगलों ने कुरान की कसम खाई, पहाड़ियों ने गऊ की कसम कि यदि गुरु जी किला छोड़ दें तो उन्हें शांति से निकलने दिया जायेगा। गुरु साहिब जानते थे कि ये कसमें झूठी हैं पर माता जी और सिक्खों के कहने पर १७०४ ई की कड़कती शीत रात में किला छोड़ दिया गया। गुरु जी अभी बचे-खुचे सिंघों के काफिले एवं परिवार के साथ थोड़ी दूर ही चले थे कि सरसा नदी के तट पर मुगलों ने पीछे से अचानक हमला कर दिया। सारा काफिला तितर-बितर हो गया। ५० सिंघों के साथ भाई उदै सिंघ ने शाही टिब्बी के पास वो खूनी जंग की कि शत्रु के दांत खट्टे हो गए। अंत में वे शहादत को प्राप्त हुए।

लड़ते हुए, जालिमों का मुकाबला करते हुए सरसा के तट पर परिवार बिछोड़ा हुआ। माता सुंदरी जी आदि भाई मनी सिंघ जी के साथ दिल्ली की ओर रवाना हुए। माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबज़ादे गंगू रसोईए के साथ मोरिंडा के पास गांव सहेड़ी पहुंचे। माल, असबाब, खज़ाना तथा कुछ सिक्ख सूरमे सरसा के पानी के तेज़ प्रवाह में बह गए। गुरुदेव निहंग कोटला खां की ओर चले, परंतु मुगलों द्वारा पीछा करने की ख़बर मिलते ही गुरुदेव चमकौर की ओर निकल गए। यहीं कच्ची गढ़ी से उन्होंने मुगलों का सामना करने का निश्चय किया। इस समय गुरु जी के साथ केवल चालीस सिक्ख और दो साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी बचे थे। चमकौर की कच्ची गढ़ी को किले का रूप दिया गया और युद्ध की रूप-रेखा तैयार की गई। गुरुदेव स्वयं गढ़ी की छत पर चढ़ तीरों की बौछार करते और पांच-पांच सिंघों का दल बाहर वैरी का सामना करता। पांच-पांच सिंघ इतनी बहादुरी से लड़ते कि "सवा लाख से एक लड़ाऊं" की मिसाल चरितार्थ करते हुए शत्रु-पक्ष को भयभीत करते हुए, मारते हुए खुद शहीद हो जाते। विश्व इतिहास का यह अनूठा युद्ध था जहां मुट्ठी भर सिंघों के सामने मुगलों के बड़े

जरनैल भी आने का साहस नहीं कर रहे थे। कच्ची गढ़ी के पिछवाड़े कुछ मुगल जरनैल सीढ़ी लगा ऊपर चढ़ने का साहस करते। उन्हें गुरु साहिब के तीरों का निशाना बनना पड़ा। मुट्ठी भर सिंघों ने मैदान में मुगलों की लाशों के ढेर लगा दिए। कितने मुगल मरे यह तो मैदान में पड़े, कटे मुंड, लाशें, सिर, टांगें, बांहें ही स्पष्ट कर रहे थे :

"सरो पाइ अंबोह चंदा शुदह ॥
कि मैदां पुर अज़ गइउ चौगां शुदह ॥"
(ज़फरनामा)

संसार के इस अनूठे युद्ध में *"कहां बीर चाली धुधावंत सारे कहां एक नौ लाख आए हकारे।" (सैनापति)*

गुरु जी के शब्दों में :

हम आखिर चिह मरदी कुनद कारज़ार ॥
कि बर चिहल तन आयदश बे शुमार ॥४१॥
चरागि जहां चूं शुदह बुरका पोश ॥
शहि शब बरामद हमा जलवह जोश ॥४२॥
(ज़फरनामा)

अर्थात् ऐसी असंतुलित लड़ाई में अकेली वीरता भी क्या कर सकती थी जब भूखे-प्यासे केवल चालीस बंदों (सिक्खों) पर बेशुमार फौज चढ़ आए। जब दुनिया के दीये (सूर्य) ने अपना मुंह छुपा लिआ और रात का राजा (चंद्रमा) पूरी सज-धज के साथ निकल आया था तब तक भूखे-प्यासे सिंघ लड़ते रहे।

इसी जंग में गुरु जी ने अपने बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी को पांच सिंघ देकर गढ़ी के बाहर भेजा; अपने हाथों से उन्हें शस्त्रों से सजाकर लड़ने को भेजा। बाबा अजीत सिंघ जी ने युद्ध-कौशल के करतब दिखाए। कवि सैनापति के शब्दों में :

चलो रणजीत जब जाइ रण मै परो कीओ संग्राम ऐसे अपारे।
लोथ पर लोथ तह डारि केती दई भभक करि रकत हुइ चले नारे।
लीए करि सांग तिह आंग पर धरति है तबै ततकार तिह ठउर मारे।
भुजन पै जोर करि लेत उठाइ कै सबन दिखलाइ भुइ माहि डारे ॥३७॥५०६॥

हाथों से उठा-उठाकर मुगलों को पटका। नेज़े के करिश्मे दिखाने के बाद :

करत मार चारो दिसा जीत सिंघ असवार।
सांग तजी करते तबै गह लीनी तरवार ॥४०॥५०९॥
कीउ जुध इह भांत करि बली सिंघ रणजीत।
बडे सूरमा जे हुते चुन मारे इह रीत ॥४३॥४१२॥

तब तक बाबा अजीत सिंघ जी के अपने शरीर पर भी अनेक घाव लग चुके थे। शरीर रक्त से ऐसे सन गया था मानो होली खेली जा रही हो। इस क्रम में वे युद्ध-भूमि में वीरगति को प्राप्त हुए।

अब छोटे साहिबज़ादे बाबा जुझार सिंघ जी ने बड़े भाई के शौर्य-प्रदर्शन से प्रेरित होकर युद्ध-भूमि में उतरने की पिता-गुरु से आज्ञा मांगी। गुरुदेव ने उन्हें थापड़ा दे विदा किया। बाबा जुझार सिंघ जी ने उत्साह के अधीन पूरा रण-कौशल दिखाया और शत्रु-दल को भारी नुकसान पहुंचाते हुए रक्त की नदियां बहा दीं। मुगलों के बड़े जरनैल आश्चर्यचकित हो देखते रहे कि एक १४ वर्षीय वीर बालक बड़ी निर्भीकता से उनके सामने डटा खड़ा है। कवि सैनापति के शब्दों में बाबा जुझार सिंघ जी दुश्मनों को मुंह-तोड़ जवाब देते हुए अंत में वीर-गति को प्राप्त हुए :

भारी जबाब जुझार दए सुनि कै सब दूतन अंग पिराए।
यो प्रभ को करनी तब ही दोऊ जूझत ही प्रभ

लोक सिधाए ॥७३॥५४२॥

धन्य हैं गुरुदेव जी के सपूत :

धंनि धंनि गुरदेव सुत तन को लौभ न कीन।
धरम राख कल मो गए दादे सो जस लीन ॥७४॥४३॥

गुरुदेव अपने सुपुत्रों को रण-भूमि में जूझते हुए देखकर उनका मनोबल बढ़ा रहे थे। योगी अल्ला यार खां के शब्दों में :

सतगुर ने वहीं किला से बच्चे को निदा दी।
शाबाश पिसर खूब दलेरी से लड़े हो।
हां किउं न हो गोबिंद के फरज़ंद बड़े हो।

बड़े साहिबज़ादों ने चमकौर की रण-भूमि में एक नया इतिहास सृजित कर उसे पावन तीर्थ-स्थल बना दिया। योगी अल्ला यार खां के शब्दों में :

बस एक हिंद में तीरथ है यात्रा के लिए।
कटाए बाप ने बच्चे जहां खुदा के लिए।

बच्चों को शहीद होता देख गुरुदेव विचलित नहीं हुए बल्कि योगी जी के शब्दों में :

बेटे के कतल की पहुंची जुही खबर।
शुकरे अला कीआ झट उठा के सर।
मुझ पर से आज तेरी इमानत अदा हुई।
बेटे की जान धरम की खातर फिदा हुई।

कवि सैनापति के शब्दों में :

तांहि समै ऐसे कहिओ गोबिंद सरन बीचार।
आज ख़ास भए ख़ालसा सतिगुर के दरबार ॥५१॥५२०॥

आज खालसा पंथ अकाल पुरख की दरगाह में कबूल हो गया है, परवान चढ़ गया है। अकाल पुरख ने *"पंथ प्रचुर करबे कहु साजा"* के जिस उद्देश्य से *"प्रभ मोहि पठायो"* आज वह उद्देश्य पूर्ण हुआ। बड़े साहिबज़ादों की शहादत हमेशा पंथ के लिए प्रेरणा-स्रोत रहेगी; खालसा चढ़दी कला में विचरण करेगा। लाला दौलत राय 'साहिबे-कमाल गुरु गोबिंद सिंघ' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि "जब रुस्तम ने भूल से अपने पुत्र का वध किया तो वो रोता-पछताता है; नैपोलियन जैसा वीर भी रूस के युद्ध में बहादुर जरनैल की मौत पर विलाप करता है; श्री रामचंद्र जी अपने भ्राता लक्ष्मण के मूर्छित होने पर रोते नहीं थकते, परंतु धन्य हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी! बड़े बेटे (साहिबज़ादे) के शहीद होने पर दूसरे बेटे जिसकी आयु अभी मात्र चौदह-पंद्रह वर्ष की थी, वात्सल्य को भुलाकर, प्रत्यक्ष मृत्यु को देखते हुए कहते हैं-- "बेटा! जाओ, (तुम भी) अपने रक्त से मेरे प्रतिज्ञा-पत्र (खालसा पंथ साजने की प्रतिज्ञा) पर हस्ताक्षर कर उसे मुकम्मल करो, जिससे मेरा प्रण और उद्देश्य सफल हो।"

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

श्री अनंदपुर साहिब तथा चमकौर साहिब के युद्धों का वर्णन

-डॉ. नवरत्न कपूर*

विश्व-प्रसिद्ध योद्धा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी केवल नौ वर्ष की अवस्था में अपने पूज्य पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बलिदान के पश्चात दसवें सिक्ख गुरु के रूप में गुरगद्दी पर सुशोभित हुए और दशमेश पिता के उप-नाम से विश्व-विख्यात हुए। बाल्यावस्था में ही इन्हें इस बात का आभास हो गया था कि मुगल शासक औरंगज़ेब कट्टर स्वभाव का होने के कारण अन्य धर्मावलंबियों का विरोधी है। इन्होंने भारतीय समाज की पद-दलित जनता का कल्याण करने के लिए कदम बढ़ाने की सोची। अपने इस जीवन-लक्ष्य का उल्लेख इन्होंने इस प्रकार किया है :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुशट दोखीअनि पकरि पछारो ॥
याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेतु साधू सभ मनमं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुशट समन को मूल उपारन ॥ (बचित्र नाटक)

अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु दशमेश पिता ने अपने दादा, मीरी-पीरी के मालिक, छठम् सिक्ख गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पद-चिन्हों पर चलते हुए सिक्ख समाज को शस्त्र धारण करने का आदेश दिया। इन्होंने गुरगद्दी पर सुशोभित होते ही अपने सिक्खों में उत्साह का संचार करने के लिए 'रणजीत नगाड़ा' तैयार करवाया। इनके समस्त दैनिक कार्य इसी नगाड़े की चोट की धुन के अनुसार संचालित होने लगे। इनका निवास-स्थान श्री अनंदपुर साहिब था, जो कि उन दिनों (आधुनिक हिमाचल प्रदेश की) कहिलूर रियासत का भाग था। कलिहूर नरेश की नाहन के राजा के साथ कई कारणों से अनबन हो गई। अपने से बड़े राज्य के महाराजा से भयभीत नाहन नरेश ने गुरु साहिब की शरण ली और अपनी दुख भरी दासतान सुनाई। उसके आमंत्रण पर गुरु साहिब यमुना के किनारे विद्यमान 'पाउंटा साहिब' नामक स्थान पर जा विराजे, जो कि उन दिनों नाहन रियासत का भाग था। ऐसा होने पर कहिलूर का राजा चौंक उठा और उसने नाहन के राजा को सबक सिखाने के लिए नाहन की ओर अपने सैनिकों के साथ कूच किया। गुप्तचरों द्वारा समाचार मिलने पर नाहन के राजा ने गुरु साहिब की सहायता लेकर कहिलूर की सेना को भंगाणी नामक स्थान पर रोक लिया। यह स्थान पाउंटा साहिब से लगभग १२ किलोमीटर की दूरी पर यमुना के किनारे स्थित है। इस (भंगाणी) युद्ध में सढौरा (वर्तमान हरियाणा प्रदेश के अंबाला ज़िले का नगर) का पीर बदरुद्दीन (बुद्धू शाह) भी गुरु साहिब की सद्भावना देखकर अपने पुत्र के साथ शामिल हुआ था। भंगाणी के युद्ध में पीर बुद्धू शाह का बेटा और गुरु साहिब के कुछ सिक्ख शहीद हो गए, फिर भी इन्होंने कहिलूर रियासत के राजशाही सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए। यह युद्ध अप्रैल, सन् १६८९ में हुआ।

*१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)

श्री अनंदपुर साहिब के युद्ध : गुरु साहिब पहाड़ी राजाओं को युद्ध में पराजित करते रहे। इसी दौरान ये श्री अनंदपुर साहिब में पूर्णतया बस गए। सभी पराजित पहाड़ी राजा सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खां के बहकावे में आकर गुरु साहिब का विरोध करने लगे। सन् १६९९ की वैसाखी के दिन जब गुरु साहिब ने अमृत छकाकर खालसा पंथ की सृजना की तो इनके विरोधी मुगल शासक तथा पहाड़ी राजा चौंक उठे। तब उन्होंने जो कार्यवाही की उसके बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. फौजा सिंघ का कथन है :-

"जब १६९९ की वैसाखी के पर्व पर हज़ारों की संख्या में गुरु के सिक्खों ने अनंदपुर साहिब में एकत्रित होकर दोधारी खंडे का अमृत-पान किया तो पहाड़ी राजाओं के महलों में शोक छा गया। उन्होंने भलीभांति जान लिया कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मौजूदगी उनकी प्रतिष्ठा के लिए खतरा बन सकती है। उन्होंने इस खतरे से मुक्त होने की युक्तियों पर विचार किया। कहिलूरपति राजा अजमेर चंद ने दूसरे पहाड़ी राजाओं से विचार-विमर्श करके गुरु जी को पत्र लिखा कि अब आप हमारे प्रदेश से चले जाएं। यदि यहां रहना है तो कर देना होगा। ऐसा न करने पर हम आपके विरुद्ध हथियार उठाएंगे। कवि सेनापति के शब्दों में गुरु जी का उत्तर इस प्रकार था :

कोप भयो जु कहियो गुरु गोविंद सुया बिधि दाम ना दीजै।
मूड़ अजानन सो हित कउन है सिंघ, यहै अब सुधह कीजै।
मांगत दाम सु यहै अब नेज़े की नोक अनी संग लीजै।
ऐसे हू जान कदी अभमान तू मारग भै पर नीर न पीजै ॥

दोहरा।
राजा आव हजूर तू चाहे सो लेइ।
कै कुछ जुध बिरुध कर सो एक न हेइ ॥"

ऐसा कठोर उत्तर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पत्र लिखकर अपने संदेश-वाहक द्वारा कहिलूर रियासत के तत्कालीन राजा अजमेर चंद को भेजा तो उसने अपने मित्र पहाड़ी राजाओं के साथ मिलकर सन् १७०० के सितंबर महीने में श्री अनंदपुर साहिब नगरी पर धावा बोल दिया। रण-भूमि में गुरु साहिब के खालसा वीरों के सामने पहाड़ी सैनिक टिक न पाए। मुट्ठी भर सिक्खों के सामने अपने दुगुने-चौगुने सैनिकों को हतोत्साहित होकर लौटते देखकर पहाड़ी राजाओं ने कूटनीति का सहारा लिया। उनका गुरु जी को कथन था कि आपके द्वारा पराजित होने के कारण हमारे आत्म-सम्मान को ठेस पहुंची है। इसके फलस्वरूप दिल्ली का मुगल शासक और उसके सूबेदार हमारा मज़ाक उड़ाएंगे। आप एक बार श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दीजिए, हम गौ-माता की सौगंध खाते हैं कि हम आपको सुरक्षित जाने देंगे।

गुरु साहिब ने उनकी खुशामद भरी बातें सुनकर निरमोहगढ़ की ओर प्रस्थान कर दिया। अभी उन्हें अपने परिवार तथा खालसा वीरों के साथ वहां रहते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि पहाड़ी सेना ने अपनी सौगंध भूलकर निरमोहगढ़ पर आक्रमण कर दिया। गुरु साहिब के सिक्खों ने उनके छक्के छुड़ा दिए। अपनी पराजय से शर्मिंदा पहाड़ी राजाओं ने सरहिंद के मुस्लिम सूबेदार की मिन्नत करके उसकी भारी सेना के साथ फिर निरमोहगढ़ पर आक्रमण कर दिया। वे भी सिक्ख वीरों के सामने टिक न पाए। कुछ दिनों के पश्चात् चारों ओर शांति देखकर गुरु साहिब फिर श्री अनंदपुर साहिब लौट आए। सन् १७०१ तथा १७०२ में शांतिपूर्वक श्री

अनंदपुर साहिब में टिककर बड़ी चौकसी से अपने सिक्खों को शस्त्रास्त्र समेत आने के लिए विश्वसनीय पत्र-वाहकों द्वारा संदेश भेजने लगे।

गुरु साहिब की इस तैयारी की भनक पाते ही निरुत्साहित पहाड़ी राजाओं ने फिर सरहिंद के सूबेदार की सहायता से श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल दिया। इस आक्रमण का संचालन मुगल सेनापति सैयद खां कर रहा था, जो कि भंगाणी युद्ध के समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का साथ देने वाले सढौरा के पीर बुद्धू शाह का निकट सम्बंधी था। गुरु जी की सेना से पराजित होकर मुगल सेनापति सैयद खां ने मुगल सेना से त्यागपत्र दे दिया और गुरु जी के शौर्यपूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनका श्रद्धालु बन गया।

इतना होने पर भी पहाड़ी राजाओं और सरहिंद के मुगल सूबेदार की सांठ-गांठ चलती रही। वे अपनी सेना में गुज्जरों तथा रंघड़ों की भी भर्ती करते रहे। इन सभी ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब पर धावा बोल दिया। शत्रु सेना की अगणित संख्या देखकर गुरु साहिब ने नगर के भीतर रहकर ही उसका मुकाबला किया। यह घेरा सात महीने तक बना रहा। शत्रु-पक्ष चाहता था कि भूख-प्यास से परेशान गुरु साहिब और उनके सहयोगी सैनिक विवशतावश आत्म-समर्पण कर दें किंतु वे अपनी आवश्यकता-पूर्ति के लिए रात में श्री अनंदपुर साहिब नगर के बाहर शत्रु के अन्नागारों पर आक्रमण कर देते और अनाज भर लाते। कई भूखे-प्यासे सिक्ख सैनिक इस प्रयास में घायल भी हो जाते थे, फिर भी सिक्ख वीर निरुत्साहित नहीं होते थे। ऐसी स्थिति में पहाड़ी राजाओं ने गौ की सौगंध और मुगल सेनापतियों ने कुरान की सौगंध खाकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को लिखित संदेश भेजा कि यदि वे श्री अनंदपुर साहिब से बाहर आ जाएं तो अनके परिवार तथा सैनिकों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया जाएगा। गुरु साहिब शत्रु के कपट-जाल को समझ गए थे, किंतु मसंदों तथा उनसे प्रभावित गुरु साहिब के श्रद्धालुओं ने माता गुजरी जी द्वारा इस बात का समर्थन करवाया कि इस भारी संकट से बचकर पंथ के मार्गदर्शन एवं उन्नति के लिए गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब छोड़ देना चाहिए। उनकी बात मानकर गुरु साहिब ने शत्रु-वर्ग के संदेश-वाहकों को उत्तर दिया कि उन्हें पत्र-प्रेषकों का सुझाव स्वीकार है।

गुरु जी ने रात्रि में श्री अनंदपुर साहिब खाली करके उसे भाई गुरबख़्श नामक एक साधु को सौंप दिया। औरंगज़ेब के आश्वासन के बावजूद गुरु साहिब को कई जगह शत्रु के घेराव को तोड़कर उसके दांत खट्टे करने पड़े।

चमकौर साहिब का युद्ध : अपनी धार्मिक सौगंधें भूल जाने वाले शत्रु वर्ग से श्री अनंदपुर साहिब छोड़ने के पश्चात भी गुरु साहिब को कीरतपुर साहिब और मुलकपुर में युद्ध करना पड़ा। जब वे बूरमाजरा पहुंचे तो उन्हें सूचना मिली कि शत्रु की सेना उनका पीछा कर रही है। फिर भी वे निर्भीक भाव से 'दुधरी' तथा 'शहनशाह की थेह' नामक गांवों में कुछ समय विश्राम करते हुए चमकौर साहिब पहुंच गए। शत्रु की सेना ने तेजी से आकर चमकौर की गढ़ी को चारों ओर से घेर लिया। युद्ध आरंभ हुआ। पांच-पांच सिंघ जत्थे के रूप में गढ़ी से बाहर निकलकर दुश्मन का मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त कर रहे थे। बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी ने युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी। दशमेश पिता जी ने साहिबज़ादे को छाती से लगाया और शाबाश देकर गढ़ी से रवाना किया। साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी को अनेक वैरियों को मारने के पश्चात् शहीदी प्राप्त करते देखकर साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी भी जूझने के लिए

व्याकुल हो उठे। उन्होंने पिता-गुरु से युद्ध में जाने की आज्ञा मांगी। सतिगुरु जी ने अपने हाथों से छोटे साहिबज़ादे को तैयार कर रण-भूमि की ओर भेज दिया। वे भी अपने बड़े भाई की तरह शत्रु के छक्के छुड़ाते हुए शहीद हो गए।

गुरु साहिब ने इस युद्ध का विवरण औरंगजेब को फ़ारसी में लिखित अपने 'फ़तहिनामा' तथा 'जफ़रनामा' नामक पत्रों में विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है।

चमकौर (जिसकी चमक दुनिया भर में निराली है) में गुरु साहिब के दोनों बड़े साहिबज़ादे, पांच प्यारों में से तीन-- भाई मोहकम सिंघ जी, भाई हिंमत सिंघ जी तथा भाई साहिब सिंघ जी जिस शूरवीरता के साथ लड़ते हुए शहीदी प्राप्त कर गए वह सचमुच एक विलक्षण घटना है। यह पावन स्थल इसी कारण पृथ्वी पर पूजायोग्य है और दुनिया भर के सिक्ख श्रद्धालु भारी संख्या में यहां पर श्रद्धा-सुमन भेंट करने के लिए उपस्थित होते हैं तथा संगत की पवित्र चरण-धूलि को मस्तक पर लगाकर धन्य-धन्य होते हैं।

संदर्भ सूची :-

१. पंजाब सौरभ (गुरु गोबिंद सिंघ विशेषांक), जनवरी १९८७ (डॉ. फौजा सिंघ, अनंदपुर दे मालिक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी), पृष्ठ ८

२. उपर्युक्त, पृष्ठ १८

चमकौर साहिब के युद्ध के बाद . . .

(पृष्ठ ७ का शेष)

जी ने कहा कि "मैं यहां तुम्हें अपना सिक्ख बनाने के लिए आया हूं।" उसने उत्तर दिया कि "हे महाराज! मुझे स्वीकार है। मैं तो आपका ही बंदा हूं।" गुरु जी ने कहा, "अगर तू बंदा है तो बंदों वाले काम कर। करामातें दिखाकर डराना-धमकाना छोड़ दे।"

दशम पातशाह ने उसे अमृत-पान कराकर उसका नाम 'बंदा सिंघ' रख दिया। उसे विशेष आदेश देकर पंजाब की ओर भेज दिया। पांच तीर अपने तरकश में से निकालकर दिए और वज़ीर खां जैसे अत्याचारियों को सज़ा देने के लिए कहा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का देहावसान : दशम पातशाह के साथ बहादुर शाह की निकटता से सरहिंद का नवाब वज़ीर ख़ान बहुत भयभीत था। उसे अपने अस्तित्व पर खतरा मंडराता हुआ दिख रहा था। गुरु जी के छोटे साहिबज़ादों को शहीद करवाना उसके लिए भारी पड़ने वाला था। उसने गुरु जी को खत्म करवाने हेतु एक साज़िश रची। उसके खरीदे हुए दो पठानों ने वेश बदलकर गुरु जी का पीछा किया। नांदेड़ साहिब में उन दोनों पठानों में से एक जमशैद ख़ान ने कटार से गुरु जी पर कातिलाना हमला किया। बहुत गहरा घाव गुरु जी को आया। गुरु जी ने दोनों में से एक को तो वहीं ढेर कर दिया तथा दूसरा भागते समय मारा गया। गुरु जी के घाव को टांके लगाकर सिल दिया गया। कुछ दिन बाद गुरु जी जब कमान पर चिल्ला (डोरी) चढ़ाने लगे तो ज़ोर लगाने पर टांके टूट गए। ज़ख्म फट गया। फिर से टांके लगाने की कोशिश सफल न हो सकी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परम ज्योति में लीन होने से पहले सिक्खों को बुलाया और आदेश दिया कि सारी सिक्ख संगत अब श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु माने, इसी के आगे शीश निवाए, किसी अन्य को अपना गुरु न माने। इसके पश्चात सिक्खों को 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तहि' बुलाकर गुरु जी परम ज्योति में समा गए।

साका सरहिंद

*-डॉ. अमृत कौर**

सरहिंद के ठंडे बुर्ज में कैद हैं माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी। दिसंबर माह की भयंकर सर्दी है। तन पर केवल तीन कपड़े हैं। सरहिंद के नवाब वज़ीर खां ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नन्हें-नन्हें लालों को अपने दरबार में बुलाया है। साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ जी और साहिबज़ादा फ़तहि सिंघ जी आयु आठ और पांच वर्ष। नन्हें-नन्हें फूल-से बाल। माता गुजरी जी की आंखें मुंदी हुई, मन परमात्मा के चरणों में अरदास में मग्न-- "हे गुरुदेव! अपने इन लालों को हिम्मत प्रदान करना। इन्हें बल देना, शक्ति देना, ताकि ये सत्य के मार्ग से विचलित न हों। यदि धर्म की रक्षा के लिए इन्हें बलिदान भी देना पड़े तो ये डगमगाएं नहीं।" माता गुजरी जी ध्यान-मग्न हो गईं। एक-एक करके सभी दृश्य उनके सामने चित्रवत मंडराने लगे।

माता गुजरी जी ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने प्रियतम को कश्मीरी ब्राह्मणों की रक्षा के लिए बलिदान देने हेतु भेज दिया था। उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नौ वर्ष के थे और उनके पालन-पोषण का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उन पर आ पड़ा था। उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। भक्ति और शक्ति की साकार प्रतिमा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने पिता-गुरु के आदर्शों पर चलकर निष्प्राण भारतीय जनता में नवीन प्राणों का संचार कर रहे थे; मानव-स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। माता गुजरी जी प्रसन्न थीं कि वे अपना उत्तरदायित्व सफलता से निभा पाई थीं। प्रभु की अपार कृपा से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के घर बारी-बारी से चार लालों ने जन्म लिया। उन्हें दादी मां बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके हर्ष का पारावार न था। प्राणों से भी प्यारे साहिबज़ादों की किलकारियों से घर गूंजने लगा किंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन इतना सुखदायी न था। वे तो दुष्टों का दमन करने के लिए आये थे। लंबा समय हो गया था श्री अनंदपुर साहिब के किले को मुगलों द्वारा घेरा डाले। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी किला छोड़ने के लिए तैयार न थे। हिंदू पहाड़ी राजाओं तथा मुगलों द्वारा श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली करवाने हेतु गाय और कुरान की कसमें खाने पर गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ दिया। गुरु जी और उनके सिक्ख अभी सरसा नदी के किनारे ही पहुंचे थे कि शत्रु-सेना सभी कसमें-वादे भूल गई। उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा उनकी सिक्ख सेना पर आक्रमण कर दिया। दुश्मनों के इस अकस्मात आक्रमण से परिवार के सभी सदस्य अलग-थलग पड़ गए। इस घटना में माता गुजरी जी और छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी गंगू के संपर्क में आ गए। गंगू गुरु-घर का रसोइया रह चुका था। वह मीठी-मीठी बातें कर और सेवा का आश्वासन देकर उन्हें अपने घर ले आया।

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), मो. :९८१५१-०९९५७

गंगू नमक-हराम निकला। इनाम के लालच में उसने मोरिंडा के कोतवाल को सूचना देकर साहिबज़ादों को पकड़वा दिया। वहां से साहिबज़ादे सरहिंद के नवाब वज़ीर खां के दरबार में पेश करने के लिए लाए गए।

एकाएक माता गुजरी जी ध्यान-मुद्रा से बाहर आईं और उनकी आखें साहिबज़ादों की राह देखने लगीं। कुछ ही समय में कदमों की आहट हुई और बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी आकर दादी मां से लिपट गए। दादी मां ने उन्हें बांहों में लेकर प्यार किया, उनका माथा चूमा और कहा, "युग-युग जीओ मेरे लाल! हां, बताओ, वज़ीर खां ने तुमसे क्या कहा?"

साहिबज़ादों ने बड़ी उत्सुकता से बताया, "दादी मां! जब हम दरबार में पहुंचे तो मोरिंडा के कोतवाल ने हमसे कहा कि हम सिर झुकाकर वज़ीर खां को सलाम करें। दादी मां! पता है तब हमने क्या कहा?"

"क्या कहा मेरे लाल?"

"हमने कहा कि यह सिर तो हमने देश-धर्म की सेवा के लिए अर्पित कर दिया है। हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्र हैं। यह सिर तो केवल अकाल पुरख के सामने ही झुक सकता है।"

"शाबाश! मेरे लाल।"

"देखो न दादी मां, यह नवाब कितना झूठा है। हमसे कह रहा था कि पिता-गुरु जी तथा बड़े भाई शहीद हो गए हैं।"

"यह सब उसने तुम्हें डराने के लिए कहा होगा मेरे लाल!"

"हम भी डरने वाले नहीं दादी मां! हमने कहा, हमारे पिता जी तो वीर पुरुष हैं। उनका एक सिक्ख सवा लाख के साथ लड़ सकता है। उन्हें खत्म करना आसान काम नहीं।"

"शाबाश मेरे बच्चो!"

"दादी मां! फिर सारे दरबारी एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। कहने लगे, बच्चे हैं कि अंगार! सुच्चा नंद ने कहा, ये सांप के बच्चे हैं, सिर से लेकर पांव तक ज़हर से भरे हुए। एक तो इनके पिता काबू में नहीं आ रहे, जब ये बड़े हो गए तो इन्हें भी काबू करना मुश्किल हो जाएगा। इन्हें खत्म कर देना ही अच्छा है।"

माता गुजरी जी इन बातों को सुनकर समझ गईं कि अब आगे क्या होने वाला है। उन्होंने पूछा, "बेटा! इन बातों को सुनकर तुम्हें डर नहीं लगा?"

"आप ही ने तो हमें न डरने की शिक्षा दी है दादी मां।"

"शाबाश बेटे! शाबाश!! मुझे विश्वास है कि तुम हर स्थिति का सामना वीरता से करोगे। इसके बाद क्या हुआ?"

"दादी मां! फिर वज़ीर खां ने (मलेरकोटले के) नवाब शेर मोहम्मद से कहा कि आपका भाई और भतीजा भी तो गुरु जी की सेना के हाथों मारे गए हैं। अब बदला लेने का अच्छा अवसर है। इन बच्चों को मैं आपके हवाले करता हूं। इनको मारकर अपने भाई-भतीजे का बदला ले सकते हो।"

"फिर नवाब शेर मोहम्मद ने क्या कहा?"

"शेर मोहम्मद तो वाकई शेर दिल है दादी मां! उसने कहा कि इन बच्चों का इसमें क्या दोष? यदि बदला लेना ही है तो मैं इनके बाप से लूंगा। मेरा भाई और भतीजा युद्ध के मैदान में मारे गए हैं, कत्ल नहीं किए गए। इन बच्चों को मारना मैं बुज़दिली समझता हूं। उसने यह भी कहा दादी मां कि इसलाम मासूम बच्चों को कत्ल करने की आज्ञा नहीं देता।"

माता गुजरी जी ने अपने पोतों को गले

से लगा लिया और प्यार करते हुए बोलीं, "फिर उस ज़ालिम वजीर खां ने क्या कहा ?"

साहिबज़ादों ने बताया कि "इसके बाद हमें अनेक लालच दिए गए कि हम इसलाम कबूल कर लें। शहज़ादियों के साथ हमारे ब्याह किए जाने की बात कही। पर जब हम न माने तो नवाब ने कहा, बोलो क्या मंजूर है-- मौत या इसलाम? दादी मां! हमें एक दिन की मोहलत दी गई है सोचने की।"

साहिबज़ादों की ये बातें सुन दादी मां प्रभु-याद में जुड़ गईं। वे रात भर मासूम फूलों-से साहिबज़ादों को अपनी छाती से लगाए बैठी रहीं, प्यार करती रहीं। साहिबज़ादे प्रगाढ़ निद्रा में सोते रहे दादी मां के आंचल का सुखद सहारा पाकर। माता गुजरी जी को आने वाले कल का आभास हो रहा था कि कल उनके पोते शहीद कर दिए जाएंगे। वे सोचने लगीं कि मेरे प्यारे गोबिंद सिंघ को तो पता भी नहीं होगा कि कल उसके कलेजे के टुकड़े इस दुनिया में नहीं रहेंगे। इसी उधेड़बुन में सवेरा हो गया। ऐसा सवेरा जो धर्म-मार्ग पर चलने वालों के लिए घने अंधेरे का संदेश लेकर आया।

वज़ीर खां के आदमी साहिबज़ादों को लेने आ पहुंचे। माता गुजरी जी ने साहिबज़ादों को गले से लगाया, माथा चूमा और आशीर्वाद देते हुए कहा, "मेरे लाल! तुम्हारे शहीद होने का अवसर आ गया है। तुम्हारे सामने श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन-सिद्धांत हैं। उनको याद करना तथा घबराना मत।"

साहिबज़ादों ने दादी मां से आशीर्वाद लिया और चल पड़े वज़ीर खां के दरबार की ओर। हंसते हुए, खिलखिलाते हुए, मानो मैदान-ए-जंग को विजय करने जा रहे हों। 'सति श्री अकाल' के नारे गुंजाते हुए शेर पिता के बच्चे शेर की चाल चल रहे थे। मुख पर भय का नामो-निशान नहीं था। ऐसा तेज़ था उनके चेहरे पर जिसे देखकर सूर्य भी फीका लगने लगे। पिछली वाली बात फिर दुहराई गई-- "मौत या इसलाम?" साहिबज़ादों के इसलाम कबूल करने से इन्कार करने पर काज़ी ने फतवा जारी कर दिया कि साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिन दिया जाए।

यह ख़बर चारों तरफ जंगल की आग की भांति फैल गई कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के छोटे साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिनवाया जा रहा है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। दीवार बननी शुरू हुई। साहिबज़ादों को बीच में खड़ा कर दिया गया। चारों ओर सन्नाटा, भय और आतंक था। देखने वाले अवाक थे। साहिबज़ादों के मुख पर दैवी मुस्कान और शांति थी। उनके भोले-भाले मुखड़े दैवी आभा से चमक रहे थे। उनके नेत्र प्रभु-सिमरन में मुंदे हुए थे। दृश्य मार्मिक और रौंगटे खड़े करने वाला था। वज़ीर ख़ान ने साहिबजादों से कहा, "क्यों अपनी जाने गंवा रहे हो? अभी तो तुम्हारे हंसने-खेलने के दिन हैं। तुम्हें दीन-धर्म की बातों से क्या लेना देना? अब भी समय है, इसलाम कबूल कर लो। तुम्हें आज़ाद कर दिया जाएगा। दुनिया भर के ऐश्वर्य-आराम तुम्हारे कदमों में रख दिए जाएंगे।"

वज़ीर खां की इस बात को सुन बाबा ज़ोरावर सिंघ जी दहाड़ उठे-- "सुन रे सूबेदार! हम तेरे दीन को ठुकराते हैं। हम अपना धर्म कभी नहीं छोड़ेंगे। हमारे दादा जी को शहीद कर मुगलों ने एक अग्नि प्रज्वलित की है। हम इस अग्नि को हवा देकर दावाग्नि बना देंगे जिससे तुम और तुम्हारा साम्राज्य भस्म हो जाएगा।"

(शेष पृष्ठ २३ पर)

माता गुजरी जी

*-स. गुरप्रीत सिंघ**

अगर हम विश्व के इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमें प्रमुखत: पुरुषों की ही प्रधानता दीख पड़ती है। बहुत कम बहादुर स्त्रियां हैं, जिनका नाम इतिहास के पृष्ठों पर दर्ज है। कारण, उस समय स्त्रियों को पुरुषों के समान समाज में विचरणे की आज़ादी नहीं थी। उनकी यह आज़ादी पुरुष प्रधान समाज ने छीन रखी थी। सिक्ख धर्म का उदय हुआ तो स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार, स्वतंत्रता दिए जाने की आवाज़ भी बुलंद हुई। इसी बुलंद आवाज़ के कारण अनगिनत सिक्ख स्त्रियां आज सिक्ख इतिहास में सम्मानजनक स्थान पाए हुए हैं। इन्हीं महान स्त्रियों में बेबे नानकी जी, माता सुलक्खणी जी, माता खीवी जी, बीबी भानी जी, माता गंगा जी, बीबी वीरो जी, माता गुजरी जी, माता भागो जी आदि अपनी सेवा, सिमरन, बहादुरी जैसे सात्विक गुणों के कारण सुप्रसिद्ध रही हैं। इनकी सिक्ख इतिहास में ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास में भी विलक्षण पहचान है। इनमें से ही एक महान शख़्सियत माता गुजरी जी के जीवन के बारे में अपने आलेख के शीर्षक के अंतर्गत हम चर्चा करेंगे, जिनका सिक्ख धर्म के इतिहास में महत्त्वपूर्ण एवं विलक्षण स्थान है।

माता गुजरी जी का सारा जीवन सत्य, सब्र, संतोष, दयालुता, नम्रता, सहनशीलता आदि गुणों के कारण आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत रहा है। माता गुजरी जी के जन्म के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं, जिसके कारण इनके जन्म की विश्चित तिथि बताना मुश्किल है। आप जी का जन्म भाई लाल चंद जी सुभाखिए खत्री (क्षत्रिय) के गृह में माता किशन कौर जी की कोख से हुआ। आप जी के माता-पिता गुरु-घर के अनन्य श्रद्धालु-सेवक थे जिसके कारण आप जी को बाल्यावस्था में ही सेवा-सिमरन की जन्म-घुट्टी मां के आंचल एवं पिता के स्नेह से मिली। माता जी अल्प अवस्था में ही अपने माता-पिता के साथ छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दरबार में जाया करते थे। वहां पर आप जी पूरी निष्ठा से हरि-नाम-सिमरन एवं सेवा किया करते थे। आपकी इसी भक्ति-भावना एवं सेवा-भावना का सदका ही आप जी को छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के घर की बहू एवं हिंद की चादर नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की सुपत्नी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपका विवाह करतारपुर में हुआ। माता गुजरी जी विवाह के पश्चात कुछ अरसा अपनी ससुराल श्री अमृतसर में रहे।

सन् १६४४ ई में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बाबा गुरदित्ता जी के सुपुत्र अर्थात् अपने पौत्र श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी का उत्तराधिकारी घोषित कर परलोक गमन कर गए। परलोक गमन से पूर्व उन्होंने अपनी सुपत्नी माता नानकी जी को आदेश दिया कि वे सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब एवं बहू

**गांव : भोमा, डाक : वडाला वीरम, ज़िला श्री अमृतसर- १४३६०१, फोन : ९८७८५५८८५१*

माता गुजरी जी को साथ लेकर अपने मायके ग्राम बकाला चली जाएं। माता नानकी जी पति-गुरु जी का आदेश पाकर अपने सुपुत्र एवं बहू को लेकर अपने मायके बकाला में आ गईं।

माता गुजरी जी ने सच्चे जीवन-साथी के रूप में गुरु जी का हर मोड़ पर साथ दिया। सब्र-संतोष की प्रतिमा माता गुजरी जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आध्यात्मिक जीवन-सफर में सहयोग देते-देते खुद भी आध्यात्मिकता की मंज़िल पा गए।

प्राकृतिक रूप से प्रत्येक स्त्री में मां बनने की प्रबल इच्छा होती है। कहते हैं कि स्त्री मां बनकर ही खुद को संपूर्ण हुआ मानती है। माता गुजरी जी को मां का पद प्राप्त करने के लिए लंबा समय प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस दौरान उनके धैर्य, विश्वास, समर्पण की दाद देनी बनती है। हम सब भलीभांति जानते हैं कि एक विवाहिता के घर जब संतान उत्पत्ति में समय से ज्यादा देर हो जाए तो समाज ताने मारने पर अमादा हो जाता है। निश्चित है कि माता गुजरी जी को भी ऐसी ही परिस्थितियों का सामना करना पड़ा होगा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरगद्दी पर सुशोभित हुए तो माता गुजरी जी गुरु-दर्शन को आने वाली संगत की सेवा में सदा तत्पर रहतीं। गुरु जी उत्तर प्रदेश, बिहार आदि क्षेत्रों में प्रचार-यात्रा पर गए। इसके बाद माता नानकी जी, माता गुजरी जी एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों को पटना साहिब ठहराकर गुरु जी आसाम एवं बंगाल में प्रचार-यात्रा पर चले गए। इतिहास साक्षी है कि माता गुजरी जी ने इस समय अपनी मानसिक स्थिति को डगमगाने नहीं दिया, कभी भी अपना धैर्य नहीं खोया, बल्कि इस स्थिति में भी वे सहनशीलता एवं समर्पण-भावना से गुरु-घर की सेवा में लगी रहीं। पटना साहिब निवास के दौरान सन् १६६६ में आपकी कोख से तेजस्वी बाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ जिन्होंने भारतीय इतिहास की तसवीर ही बदल दी। अब माता गुजरी जी की पारिवारिक जिम्मेदारियां और भी बढ़ गईं। गुरु जी ने जितनी भी बड़ी से बड़ी प्रचार यात्राएं कीं इनकी सफलता का श्रेय माता गुजरी जी को जाता है, चूंकि माता जी ने घरेलू जिम्मेदारियों को पूरी सतर्कता के साथ संभाले रखा था, जिसके कारण गुरु जी निश्चिंत होकर प्रचार-यात्राएं करते रहे। माता गुजरी जी इस बात को भलीभांति समझते थे कि जनमानस की सेवा व धर्म का प्रचार-प्रसार करना ही गुरु जी का ध्येय है और परिवार की जिम्मेदारी निभाना उनका दायित्व है।

मां की बच्चे के जीवन-निर्माण में अहम भूमिका होती है। मां की शिक्षा बच्चे को महान बनाने में बुनियाद का काम करती है। बच्चा ज़िंदगी का बहुत कुछ मां से ही सीखता है। कहा जाए तो बच्चे की प्रथम शिक्षिका मां ही होती है। माता गुजरी जी ने बहुत ही सूझ-सियानप से समाज की आवश्यकता को मुख्य रखते हुए अपने सुपुत्र का जीवन निर्मित किया। फिर माता गुजरी जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब की आज्ञा लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों को साथ लेकर श्री अनंदपुर साहिब आ गए। यहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को पहली बार देखा।

माता गुजरी जी को श्री अनंदपुर साहिब में बहुत ही विकट काल से गुज़रना पड़ा। यहां पर इनको एक से बढ़कर एक मुश्किलों एवं परीक्षाओं का सामना करना पड़ा। माता गुजरी

जी मुसीबतों का मुकाबला बहुत ही धैर्य, अडोलता एवं दिलेरी के साथ करते रहे। माता गुजरी जी के जीवन का विलक्षण गुण यह है कि उन्होंने पूरी ज़िंदगी कभी भी जल्दबाज़ी से काम नहीं लिया। श्री अनंदपुर साहिब में रहते हुए माता गुजरी जी पर ऐसा मुश्किल समय भी आया जब उनको अपने पति-गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब को (हिंदू धर्म की रक्षा हेतु) दिल्ली में बलिदान देने के लिए भेजना पड़ा। माता जी बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए बल्कि उन्होंने बहुत ही हौसले के साथ उनको विदा किया। इससे बड़ी हौसले व त्याग की मिसाल हमें इतिहास में कहीं दिखाई नहीं देती। अगर हम कह दें कि माता गुजरी जी एवं त्याग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। गुरु जी के दिल्ली प्रस्थान के बाद माता गुजरी जी ने जहां सिक्ख पंथ का नेतृत्व किया वहीं (बाल) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को भी इस योग्य बनाया कि वे आने वाली चुनौतियों का निडरता से सामना कर सकें।

जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद कर दिया गया तब भी माता गुजरी जी ने बड़े ही धैर्य का परिचय दिया। भाई जैता जी (जीवन सिंघ) गुरु जी का शीश लेकर श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे तो माता जी ने बड़े साहस एवं हिम्मत का परिचय देते हुए गुरु जी का पावन शीश झोली में डलवाया। तत्पश्चात उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए अपने नौ वर्षीय सुपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को सांसारिक आवश्यकताओं से अवगत करवाकर एक महान शख़्सियत के रूप में तैयार किया। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को आध्यात्मिक एवं सैनिक शिक्षा में भी प्रवीण करवाया। जब गुरु जी १८ वर्ष के हुए तो उनको रणजीत नगाड़ा तैयार करवाकर दिया, जिसकी चोट की ध्वनि ने गुरु-घर के विरोधियों को भयभीत कर दिया। उनको अपनी स्वतंत्रता के इर्द-गिर्द संकट मंडराता नज़र आने लगा।

माता गुजरी जी के जीवन में एक दिन ऐसा भी आया कि उनको अपने परिवार के साथ श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़कर जाना पड़ा क्योंकि सभी पहाड़ी राजाओं ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया था। घेरा लंबा हो गया। अंदर रसद-पानी की किल्लत आने लगी। कुछेक सिंघों ने माता गुजरी जी से निवेदन किया कि आप गुरु जी को किला खाली करने के लिए मनाएं। उधर हिंदू राजा एवं मुसलमान शासक गऊ एवं कुरान की कसमें खाकर कह रहे थे कि आप चुपचाप श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दो, आपको आराम से जाने दिया जाएगा। गुरु जी को उनकी कसमों पर तनिक भी भरोसा नहीं था किंतु सिक्खों के ज़ोर देने पर गुरु जी ने किला खाली कर दिया।

दिसंबर माह की सर्दी, काली अंधेरी रात, सरसा नदी में पानी का बहाव भी तेज था। दुश्मनों ने अपनी कसमें एवं वायदे भुलाकर हमले हेतु पीछा करना शुरू कर दिया। सरसा नदी के तट पर आकर जब हमला हुआ तो गुरु-परिवार बिछुड़ गया। माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी व बाबा फ़तहि सिंघ जी को गंगू (जो गुरु-घर का पुराना रसोइया रह चुका था) अपने गांव सहेड़ी ले गया। उसने सरकार से इनाम लेने के लालच में आकर इत्तला देकर सरहिंद के सूबेदार वज़ीर ख़ान को पकड़वा दिया।

सरहिंद के सूबेदार वज़ीर खां ने सिपाहियों को

भेजकर माता गुजरी जी एवं छोटे साहिबज़ादों को ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया। जरा सोचिए, किस प्रकार बुजुर्ग अवस्था में माता गुजरी जी ने अपने पोतों के साथ दिसंबर माह की कड़क ठंड में ठंडे बुर्ज में दिन बिताए होंगे! यह माता गुजरी जी के जीवन के सबसे कीमती दिन थे जब वे छोटे साहिबज़ादों को धर्म पर अडिग रहने का पाठ पढ़ा उन्हें शहादत के लिए भेज सकीं। यह था एक आदर्श दादी मां का अपने पोतों की परवरिश का विलक्षण, आश्चर्यजनक एवं अद्वितीय उदाहरण। ठंडे बुर्ज में बैठ छोटे साहिबज़ादों को अपनी छाती से लगाकर माता गुजरी जी ऊष्णता देती रहीं और उनको धर्म की खातिर बलिदान देने के लिए प्रेरित करती रहीं। माता गुजरी जी पांच एवं आठ वर्षीय साहिबज़ादों को आलिंगन में लेकर उन्हें उनके दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन-बलिदान की साखी सुनाती रहीं और उनका लहू गरमाती रहीं। इसी प्रेरणा सदका छोटे साहिबज़ादे शत्रुओं के लोभ-लालच, ऐशो-आराम के प्रलोभन ठुकराते रहे और घोर यातनायें सहते हुए, अपने धर्म पर दृढ़ रहकर शहादत का जाम पी गए। जब माता गुजरी जी को छोटे साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिनकर शहीद किए जाने की ख़बर पहुंची तो वे भी परलोक गमन कर गईं।

यह है धन्य माता गुजरी जी का जीवन, जिनके दम भरने से श्री गुरु तेग बहादर साहिब शहादत हेतु प्रस्थान कर गए; जिनकी प्रेरणा सदका श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संत-सिपाही वाले महान योद्धा का रूप लेकर मानसिक एवं सामाजिक गुलामी के विरुद्ध जूझते रहे; जिनके उत्साह से अल्पावस्था में छोटे साहिबज़ादों की शहादत प्रवान चढ़ी।

आज भी सिक्ख पंथ को ज़रूरत है ऐसी माताओं की तथा छोटे साहिबज़ादों के जीवन से प्रेरणा लेने वाली नौजवान पीढ़ी की। आज अगर किसी स्त्री की बहादुरी, आदर्श सोच, दृढ़ संकल्प, धैर्य, योग्य नेतृत्व, अदम्य साहस एवं उत्साहपूर्ण प्रेरणा की बात करनी हो तो सलाम करना बनता है, शीश झुकाना बनता है माता गुजरी जी को, जिनमें ये सारे के सारे गुण विद्यमान थे। ❁

साका सरहिंद

(पृष्ठ १९ का शेष)

बाबा फ़तहि सिंघ जी ने जोश में आकर कहा, "हम अपने धर्म पर बट्टा कभी नहीं लगने देंगे। हमारी परंपरा है-- *"सिर जावे तां जावे पर सिक्खी सिदक ना जावे।"* मरना तो एक दिन सभी ने है। हमने अपने गुरु का अमृत छका है। हमें मृत्यु से कोई भय नहीं।"

वज़ीर खां क्रोध में आ गया। उसने अपने करिंदों को जल्दी दीवार ऊंची उठाने को कहा। जब खूनी दीवार ने दोनों साहिबज़ादों को ढक लिया तो वे दोनों बेहोशी की हालत में गिर गए। उनके साथ दीवार भी गिर गई। फिर वज़ीर खां के आदेश से जल्लाद शाशल बेग व बाशल बेग ने दोनों साहिबज़ादों को धारदार हथियार से शहीद कर दिया।

सिक्ख इतिहास के पृष्ठों में छोटे साहिबज़ादों ने अपनी शहादत देकर 'साका सरहिंद' नाम का अध्याय जोड़ दिया। ❁

अल्ला यार ख़ान योगी एवं उनकी अद्वितीय रचना

-सिमरजीत सिंघ*

अल्ला यार ख़ान योगी एक सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि हुए हैं, जिनका सिक्खों के दिलों में बहुत सत्कार है। इनका पूरा नाम 'हकीम अल्ला यार ख़ान रहमान' अथवा 'दकनी' था। इनको योगी के उपनाम से भी याद किया जाता है। इनके जन्म एवं मृत्यु के बारे में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती। ये अनारकली, लाहौर के निवासी थे तथा हिंदू-मुसलिम एकता के पक्षीय थे। इनके पूर्वजों के बारे में अंदाज़ा लगाया जाता है कि वे दक्षिण के रहने वाले थे। योगी जी का जन्म १८७० ई के आस-पास हुआ माना जाता है। ये व्यवसाय के रूप में ईरानी/यूनानी तबीब (हकीम) थे।

योगी जी का कद लंबा, मज़बूत शरीर, मूंछें छोटी तथा दाड़ी खसखसी थी। उनकी शक्ल-सूरत एक ईरानी पीर की झलक बख़्शती थी। ये हिंदी, उर्दू तथा फारसी भाषा के विद्वान थे। इन्होंने साका सरहिंद व चमकौर साहिब के साके को मिश्रित भाषा में प्रभावशाली ढंग से पेश किया। इनकी जुबान में इतना रस था कि जब ये शहीदी साके पढ़ते थे तो श्रोताओं पर जादुई असर होता था। अल्ला यार ख़ान योगी का सिक्ख श्रोताओं में बहुत प्रभाव था। ये सिक्ख कवि-दरबारों के अलावा चमकौर साहिब, ननकाणा साहिब तथा फ़तहिगढ़ साहिब में ऐतिहासिक समागमों में हिस्सा लेकर पंजाबियों को श्रद्धा, धैर्य तथा कुर्बानी का पाठ पढ़ाया करते थे। इन्होंने १९०९ ई से १९१५ ई तक उर्दू का मासिक पत्र "गऊ माता" प्रकाशित किया, जिसकी संपादना आपने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से की। इस मासिक पत्र द्वारा आपने सैकड़ों मुसलमानों के साथ-साथ मुसलमान रियासतों के नवाबों को गाय-रक्षा हेतु रज़ामंद किया। इन्होंने कड़ा परिश्रम कर अपने तर्कवादी विचारों से कुसतुनतुनिया (तुर्की) के मौलवी से गाय-हत्या के विरुद्ध एक फतवा भी ले लिया था।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबज़ादों की शहादत से आप बहुत प्रभावित थे। आपने उनकी शहादत के बारे में मीर अनीस की पैरवी करते हुए मरसिए लिखे जो दो पुस्तकों-- 'शहीदानि-वफ़ा' तथा 'गंजि-शहीदां' के रूप में प्रकाशित हुए।

'शहीदानि-वफ़ा' १९१३ ई में तैयार हुई। इस पुस्तक में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के श्री अनंदपुर साहिब के युद्धों तथा छोटे साहिबज़ादों की पावन शहादत का हाल बहुत ही भावपूर्ण शब्दों में बयान किया गया है। इस पुस्तक में बहुत ही जोशीली तथा हृदय को छू लेने वाली कविता के रूप में सारा प्रसंग बयान किया गया है, जिसके ११७ बंद पुस्तक के लगभग ३७ पृष्ठों पर अंकित हैं।

साका सरहिंद तथा चमकौर साहिब के साके से प्रभावित होकर चाहे अनेकों कवियों एवं लेखकों ने अपनी कलम चलाई किंतु इन साकों के बारे में काव्य रचकर अल्ला यार ख़ान योगी ने अपनी जो रूह फूंकी है, वो अपनी मिसाल खुद ही है। शायर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ने का दृश्य पेश करते हुए बयान किया है :

तारों की छांव किले से सतगुर रवां हुए।
कस के कमर सवार थे सारे जवां हुए।. . .
चारों पिसर हुज़ूर के, हमरह सवार थे।
ज़ोर-आवर और फ़तह , अजीत और जुझार थे।

*संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश।

सरसा नदी के तट पर जब गुरु जी पहुंचे तो शत्रुओं ने अपनी सभी कसमें भुलाकर गुरु जी के काफिले पर हमला कर दिया। गुरु जी द्वारा शत्रुओं को ललकारने के बारे में कवि ने बयान किया है :

घोड़े को एड़ी दे के गुरू रण में डट गए।
फ़रमाए बुज़दिलों से कि तुम क्यों पलट गए?
अब आओ रण में जंग के अरमां निकाल लो।
तुम कर चुके हो वार, हमारा संभाल लो।

सरसा नदी पार करते हुए सरसा में आई भीष्ण बाढ़ के कारण गुरु साहिब से माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादे-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी एवं बाबा फ़तहि सिंघ जी बिछुड़ गए। शायर ने इस घटना को बयान करते हुए लिखा है :

ज़ोर-आवर और फ़तह का इस दम बयां सुनो।
पहुंचे बिछड़ के हाय कहां से कहां सुनो।

काफ़िले से बिछुड़कर माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादे विलक्षण रास्ते पर चलते हुए गुरु जी तथा अपने साथियों को ढूंढने का प्रयत्न करते हैं। इस घटना के बारे में कवि लिखता है :

रस्ते में जब भटक गए नन्हें सवार थे।
तकते पिता को चारों तरफ़ बार बार थे।

वे रास्ते में दादी मां माता गुजरी जी से बड़ी मासूमियत से पूछते हैं :

दादी से बोले अपने सिपाही किधर गए ?
तड़पा के हाय सुरति-माही किधर गए ?

इस घटना में गंगू की भूमिका को पेश करते हुए उसकी बेवफाई का ज़िक्र शायर ने इस प्रकार किया है :

बदज़ात बद-सिफ़ात वो गंगू नमक-हराम।
टुकड़ों पे सतगुरू के जो पलता रहा मुदाम।
घर ले के शाहज़ादों को आया जो बदलगाम।
था ज़र के लूटने को किया सब यह इंतज़ाम।
दुनिया में अपने नाम को बदनाम कर गया।
दुश्मन भी जो न करता वो यह काम कर गया।. . .
जिस घर का तू गुलाम था उससे दग़ा किया।
ला कर के घर में काम यह क्या बेवफा किया?

जब सरहिंद के सूबे वज़ीर ख़ान की कचहरी में पेश करने के लिए साहिबज़ादों को सिपाही लेने के लिए आए तो ठंडे बुर्ज में माता गुजरी जी ने साहिबज़ादों को जो शिक्षा दी, उसको कवि ने यूं बयान किया है :

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं।
केशों को कंघी कर दूं ज़रा मुंह धुला तो लूं।
प्यारे सरों पे नन्ही सी कलग़ी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुमको दूल्हा बना तो लूं।

सूबा सरहिंद द्वारा जब सारे तरीके अपनाकर देख लिये तो अपनी कोई पेश न चलती देखकर उसने साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिनने का हुक्म दे दिया। इस घटना को बहुत ही करुणामयी ढंग से पेश करते हुए लिखा है :

ठोडी तक ईंटें चुन दी गईं मुंह तक आ गईं।
बीनी को ढांपते ही वो आखों पे छा गईं।
हर चांद सी जबीन को घन सा लगा गईं।
लख़्ते-जिगर गुरू के वो दोनों छुपा गईं।

अल्ला यार ख़ान योगी इस घटना को सरहिंद की तबाही का कारण मानता हुआ बयान करता है :

जोगी जी इसके बाद हुई थोड़ी देर थी।
बसती सरहिंद शहर की ईंटों का ढेर थी।

अल्ला यार ख़ान योगी सरहिंद की घटना को सिक्ख राज्य की नींव के रूप में देखता हुआ साहिबज़ादों की तरफ से कविता में बयान करता हुआ लिखता है :

हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नींव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का है किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का है पौधा लगा चले।

पुस्तक 'गंजि-शहीदां' में योगी जी ने चमकौर साहिब की जंग तथा बड़े साहिबज़ादों की पावन शहादत के बारे में बड़े ही भावपूर्ण ढंग से लिखा है। इस कविता में ११० बंद हैं जो १९१५ ई में

पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए।

इस पुस्तक में कवि सरसा के तट का दृश्य पेश करता हुआ लिखता है :

जब दूर से दरिया के किनारे नज़र आए।
डूबे हुए सरसा में प्यारे नज़र आए।
यह देख के बिगड़े हुए सारे नज़र आए।
बिफ़रे हुए सतिगुरु के दुलारे नज़र आए।
कहते थे इजाज़त ही नहीं है हमें रण की।
मट्टी तक उड़ा सकते हैं दुश्मन के चमन की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सरसा नदी के तट से अपने काफ़िले से बिछुड़कर थोड़े-से सिंघों के साथ चमकौर साहिब पहुंच गए। वहां एक छोटी-सी कच्ची गढ़ी में दुश्मन का मुकाबला करने की योजना बनाकर ठहर गए। इस घटना के बारे में कवि लिखता है :

-जब किले में उतारी थी सतिगुर की सवारी।
वाहिगुरू की फ़तिह दलेरों ने पुकारी।
वो हुम हुमा शेरों का वो आवाज़ थी भारी।
थर्रा गया चमकौर हुआ ज़लज़ला तारी।
सकते में खुदाई थी तो हैरत में जहां था।
नारा से हुआ चरख़ भी साकन यह गुमां था।
-कुछ लेट गए ख़ाक पे ज़ी-पोश बिछा कर।
पहरा लगे देने कई तलवार उठा कर।
गोबिंद भी शबबाश हुए खैमा में जाकर।
देखा तो वहां बैठे हैं गरदन को झुका कर।
वाहिगुरू वाहिगुरू है मुंह से निकलता।
है तू ही तू! तू ही तू!! है मुंह से निकलता।

कवि गुरु जी से प्रभावित होकर लिखता है :

-करतार की सौगंध है, नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ वो कम है।
हरचंद मेरे हाथ में पुर ज़ोर कलम है।
सतिगुर के लिखूं वस्फ कहां ताबि-रकम है।
इक आंख से क्या बुलबुला कुल बहिर को देखे!
साहिल को या मंझधार को या लहर को देखे!
किस सब्र से हर एक कड़ी तूने उठाई।
किस शुक्र से हर चोट कलेजे पे है खाई।
वालिद को कटाया, कभी औलाद कटाई।
की फ़िक्र में फ़ाके में, हज़ारों से लड़ाई।
हिम्मत से तेरी सब थे सलातीं लरज़ते।
जुर्रत से तेरी लोग थे ता चीन लरज़ते।

चमकौर साहिब की गढ़ी में लाखों की संख्या में दुश्मन की फौज का मुट्ठी भर सिंघों ने मुकाबला कर शहादतें प्राप्त कीं। साहिबज़ादों का रण में जूझने का दृश्य पेश करते हुए कवि लिखता है :

गोबिंद के दिलदार किले से निकल आए।
वो देखिए सरकार किले से निकल आए।
घोड़े पे हो सवार किले से निकल आए।
ले हाथ में तलवार किले से निकल आए।
किया वस्फ़ हो उस तेग का इस तेग़ि-ज़बां से।
वो म्यान से निकली नहीं निकली यह दहां से।

लाखों की संख्या में दुश्मन फौज मुट्ठी भर सिंघों का तनिक भी हौसला कम नहीं कर सकी। सिंघों की चढ़दी कला तथा दिलेरी के बारे में कवि लिखता है :

अरशाद हो तो सब को अकेला भगा के आऊं।
अजमेर चंद आन में कैदी बना के आऊं।
बाज़ीद खां का सर भी अभी जा के मैं उड़ाऊं।
इक सिंघ एक लाख पे गालिब हूआ दिखाऊं।
'शाबाश!' कह के सतिगुरू फौरन खड़े हुए।
जुर्रत पे पहरेदार की वो खुश बड़े हुए।

चमकौर साहिब के बारे में कवि लिखता है :

चमक है मिहर की चमकौर! तेरे ज़र्रों में।
यहीं से बन के सतारे गए सम्हां के लिये।
गुरू गोबिंद के लखति-जिगर अजीतु-जुझार।
फ़लक पे इक यहां दो चांद है ज़िया के लिये।

अंत में योगी जी चमकौर साहिब की धरती को सारे तीर्थों से पावन एलानते हुए लिखते हैं :

छाया हुआ दीवान पे अब ग़म का समां है।
बस, ख़त्म शहीदों की शहादत का बिआं है।
बस, एक हिंद में तीर्थ है, यात्रा के लिये।
कटाए बाप ने बच्चे जहां, खुद के लिये।

रंघरेटे-गुरु के बेटे : भाई जीवन सिंघ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

भाई जीवन सिंघ नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब एवं दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के परम प्रिय सिक्खों में से एक थे। भाई साहिब नवम् पातशाह की शहादत के समय दिल्ली में थे और शहादत के बाद गुरु जी का शीश लेकर दशमेश पिता के पास श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे थे। यही नहीं, आपने बाद में 'सिंघ' सजकर अनेक युद्धों में भाग लिया और अंततः चमकौर साहिब के युद्ध में शहादत प्राप्त की।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन : भाई जीवन सिंघ के पिता का नाम भाई सदा नंद और माता का नाम बीबी प्रेमो था। भाई सदा नंद और बीबी प्रेमो बहुत पहले से ही गुरु-घर के श्रद्धालु थे। यह दम्पति लंबे समय से नवम् पातशाह की सेवा करता चला आ रहा था। जब नवम् पातशाह बकाला गांव में निवास करते थे तब भी ये दोनों गुरु जी के साथ ही थे। गुरु जी बंदगी करने में लीन रहते और ये पति-पत्नी तन-मन से गुरु साहिब की सेवा में लगे रहते। नवम् पातशाह जब गुरगद्दी पर सुशोभित हुए तब भाई सदा नंद और बीबी प्रेमो गुरु जी के साथ श्री अनंदपुर साहिब आ गये।

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म-प्रचार यात्रा के लिए जब उत्तर-पूर्व की ओर निकले तो भाई सदा नंद एवं बीबी प्रेमो भी सेवा-कार्य के लिए साथ हो लिए। यात्रा के दौरान पटना शहर में ही भाई जीवन सिंघ का जन्म हुआ। आपका नाम 'जैता' रखा गया। भाई जैता जी दशमेश पिता से उम्र में थोड़ा बड़े थे। पटना में ही श्री दशमेश पिता का जन्म हुआ था। पटना में ही भाई जैता जी के छोटे भाई का जन्म हुआ जो भाई संगता के नाम से प्रसिद्ध हुए। सन् १६७१-७२ ई. में जब नवम् पातशाह परिवार सहित श्री अनंदपुर साहिब वापस आये तो भाई जैता जी का परिवार भी गुरु जी के साथ आ गया।

नवम् पातशाह की शहादत और भाई जैता जी की बहादुरी : जब नवम् पातशाह कश्मीरी पंडितों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा हेतु दिल्ली गये तो साथ गये सिक्खों में भाई जैता जी भी शामिल थे। भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दिआला जी की शहादत के बाद नवम् पातशाह ने दिल्ली के चांदनी चौक में (शीश कटाकर) शहादत प्राप्त की। औरंगजेब को भ्रम था कि गुरु जी के पार्थिव शरीर को उठाने कोई सिक्ख नहीं आयेगा। ऐसे में भाई जैता जी ने गज़ब की बहादुरी दिखाई। आप भरे पहरे में से नवम् पातशाह के शीश को अठा लाये और श्री अनंदपुर साहिब जा पहुंचे। गुरु जी की देह को भाई लक्खी शाह अपने गांव ले गये और अपने घर को आग लगाकर गुरु जी की देह का दाह-संस्कार किया।

भाई जैता जी जब श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे तो दशमेश पिता ने गुरु-पिता का शीश देख भाई जैता जी को गले से लगा लिया। भाई जैता जी के अद्‌भुत साहस से प्रसन्न होकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने "रंघरेटे-गुरु के बेटे" कहकर भाई साहिब को सम्मानित किया। बाद

(शेष पृष्ठ २९ पर)

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

भाई जीवन सिंह शहीद

*-स. गुरदीप सिंह**

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब 'बकाला' नामक ग्राम में निवास करते थे। वहां भाई सदा नंद गुरु जी की सेवा में थे। पूर्वी इलाकों में धर्म प्रचार के लिए जाते समय गुरु जी भाई सदा नंद को भी साथ ले गए। इसी दौरान कोइल नगर (आजकल अलीगढ़) निवासी शिव नारायण की पुत्री बीबी प्रेमो के साथ भाई सदा नंद की शादी हो गई। सन् १६६० ई में गुरु जी धर्म प्रचार करते हुए पटना साहिब पहुंचे। यहां पर भाई सदा नंद और बीबी प्रेमो के गृह में १३ दिसंबर, १६६१ ई को एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने 'जैता' रखा। बाद में सारा परिवार गुरु जी के साथ श्री अनंदपुर साहिब आ गया। यहां पर भाई जैता जी ने पंजाबी, हिंदी, ब्रज, संस्कृत, फारसी और अरबी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया और संगीत-शिक्षा प्राप्त की। शस्त्र-विद्या में तेग चलाना, बंदूक चलाना, तीरंदाजी, घुड़सवारी और तैराकी महान योद्धा (मामा) भाई किरपाल चंद के नेतृत्व में प्राप्त की।

११ नवंबर, १६७५ ई को चांदनी चौंक में समाणा के जल्लाद जलालुद्दीन ने काजी अब्दुल वहाब द्वारा सुनाए गए फतवे के अनुसार तलवार द्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब का शीश उतारकर उन्हें शहीद कर दिया। उस समय की हकूमत की तरफ से गुरु जी के शीश और धड़ को उठाकर ले जाने वाले को भी मौत के घाट उतार देने का हुक्म एलान किए जाने के कारण किसी में गुरु जी का पार्थिव शरीर उठाने की हिम्मत न हुई। भाई जैता जी गुरु जी के पार्थिव शरीर के पास पहुंच गए। बड़ी फुर्ती से भाई जैता जी ने गुरु जी का शीश उठा लिया और चुपचाप वहां से खिसक लिए। भाई जैता जी गुरु जी का शीश लेकर रात के अंधेरे में शाही फौजों की आंखों में धूल झोंकते हुए, टेढ़े-मेढ़े रास्ते से निकलते हुए १५ नवंबर, १६७५ ई को कीरतपुर साहिब पहुंच गए। यहां से गुरु जी के पावन शीश को श्री अनंदपुर साहिब लाया गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई जैता जी को गले से लगाते हुए 'रंगरेटा-गुरु का बेटा' का खिताब दिया। यहां पर पूरी गुरु-मर्यादानुसार गुरु जी के पावन शीश का अंतिम संस्कार कर दिया गया। इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा सीस गंज साहिब सुशोभित है।

भाई जैता जी ने नवम् गुरु जी की दिल्ली में शहादत सम्बंधी आंखों देखी और कानों सुनी घटना बताई। यह भी बताया कि उस समय दिल्ली में इतनी दहशत थी कि किसी में भी गुरु जी के पार्थिव शरीर के पास जाने की हिम्मत न जगी तथा सभी घरों में दुबककर बैठ गए। इस पर गुरु जी ने कहा कि वे ऐसा पंथ तैयार करेंगे जो मौत से डरेगा नहीं, मौत के साथ भिड़ेगा।

पाउंटा साहिब में सजाए गए दीवान में भाई खज़ान सिंघ, नगर पट्टी निवासी ने अपनी सुपुत्री बीबी राज कौर का रिश्ता भाई जैता जी के साथ करना स्वीकार किया और वहीं पर भाई जैता जी का अनंद कारज गुरु जी ने करवाया। इनके घर चार सुपुत्रों-- भाई सुक्खा सिंघ, भाई सेवा सिंघ, भाई गुलज़ार सिंघ और भाई गुरदिआल सिंघ ने जन्म लिया। पाउंटा

३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०

साहिब में ही गुरु-दरबार के ५२ कवियों और ३२ लेखकों ने सिक्ख धर्म से सम्बंधित साहित्य रचा। भाई जैता जी ने अपनी रचना 'श्री गुरु कथा' का कुछ भाग यहीं पर सम्पूर्ण किया।

१६९९ ई की वैसाखी को गुरु जी ने पांच प्यारे साजकर खालसा पंथ की सृजना की। इसके पश्चात भाई जैता जी ने पांच प्यारों से अमृत की दात प्राप्त की और उनका नाम 'जीवन सिंघ' रखा। भाई जीवन सिंघ ने अपनी रचना 'श्री गुरु कथा' में अमृत-संकल्प, अमृत-संचार के समय की सारी घटना और स्थिति पर प्रकाश डाला है। अमृत तैयार करने की विधि, पांच करारों की महत्ता और रहित-मर्यादा के बारे में विस्तार से लिखा है। भाई जीवन सिंघ ने गुरु जी के साथ भंगाणी की जंग, नादौण की जंग, बजरूड़ की जंग, निरमोहगढ़ की जंग, श्री अनंदपुर साहिब की पहली, दूसरी, तीसरी और चौथी जंग, कलमोट की जंग, बसी कलां से ब्राह्मण की स्त्री को छुड़ाना, सरसा की जंग में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए। सरसा की जंग में साहिबज़ादा अजीत सिंघ लड़ते हुए दुश्मनों के घेरे में आ गए। भाई जीवन सिंघ घोड़े पर सवार होकर दोनों हाथों में कृपाण और मुंह में घोड़े की लगाम पकड़कर दुश्मनों को मार गिराते हुए गए तथा उनके घेरे से साहिबज़ादा अजीत सिंघ के सकुशल निकलने में मदद की।

कुर्बानी के इस पुंज भाई जीवन सिंघ ने दिल्ली में पिता भाई सदा नंद, ताऊ आज्ञा राम और उनका पूरा परिवार; सरसा की जंग में अपनी माता प्रेमो और दो छोटे सुपुत्र- भाई गुलज़ार सिंघ और भाई गुरदिआल सिंघ; देश और कौम के लिए न्यौछावर कर दिए। ❁

रंघरेटे-गुरु के बेटे : भाई जीवन सिंघ

(पृष्ठ २७ का शेष)

में नवम् पातशाह के शीश का दाह-संस्कार श्री अनंदपुर साहिब में किया गया।

भाई जैता जी से भाई जीवन सिंघ : भाई जैता जी अपने माता-पिता के समान निरंतर गुरु-घर की सेवा में लगे रहते। सन् १६९९ ई की वैसाखी वाले दिन जब दशमेश पिता ने 'खालसे' की सृजना की तो भाई जैता जी ने भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथ से अमृत-पान किया और 'सिंघ' सजकर 'भाई जैता' से 'भाई जीवन सिंघ' बन गये।

भाई जीवन सिंघ का युद्ध-कौशल : भाई जीवन सिंघ अत्यंत ऊंचे और मज़बूत डील-डौल वाले थे। आपको युद्ध-कला एवं शस्त्र-संचालन विशेष प्रिय था। आप गुरु जी की सेना के एक महत्त्वपूर्ण सिपहसालार थे। भाई साहिब ने दशमेश पिता द्वारा लड़े गये लगभग हर युद्ध में भाग लिया और प्रत्येक युद्ध में गज़ब की बहादुरी दिखाई।

जंग में शहादत : १७०४ ई में लाहौर एवं सरहिंद के सूबेदारों और पहाड़ी राजाओं की सम्मिलित फौज़ ने श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया। सिक्ख लगातार संघर्ष करते रहे। घेरा अंततः आठ महीने तक खिंच गया। सिक्खों द्वारा बार-बार आग्रह करने पर एवं शत्रु के आश्वासन दिलाने पर दशमेश पिता अपने परिवार एवं सिक्खों के साथ श्री अनंदपुर साहिब छोड़कर निकले। इन सिक्खों में भाई जीवन सिंघ भी शामिल थे। धोखेबाज़ शत्रु-दल ने रात्रि में सरसा नदी पार कर रहे गुरु जी पर भयानक आक्रमण कर दिया।

भयानक जंग छिड़ गई। भाई जीवन सिंघ जी आखिरी दम तक शत्रुओं को धराशायी करते हुए शहीद हो गए। ❁

शहीद बाबा गुरबख़श सिंघ

*-स. बिकरमजीत सिंघ**

शहीद बाबा गुरबख़श सिंघ का नाम सिक्ख इतिहास में विशेष स्थान रखता है। उन्होंने अहमदशाह दुर्रानी (अब्दाली) के सातवें हमले के दौरान श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।

बाबा गुरबख़श सिंघ का जन्म लाहौर ज़िले के गांव लील में १० अप्रैल, १६८८ ई को भाई दसौंधा सिंघ तथा माता लछमी के घर हुआ। बाबा जी का परिवार सन् १६९३ ई में श्री अनंदपुर साहिब चला आया। यहां बाबा जी ने भाई मनी सिंघ जी के जत्थे से अमृत-पान किया।

बाबा जी बाणी और बाणे के पक्के धारणी थे, पक्के नित्तनेमी, रहित में संपूर्ण गुरसिक्ख थे। अमृत छकने के बाद आप तत्कालीन सिक्ख जरनैल बाबा दीप सिंघ जी के जत्थे में शामिल हो गए।

सन् १७५७ ई में बाबा दीप सिंघ जी की शहीदी के बाद बाबा गुरबख़श सिंघ ने अपना नया जत्था कायम कर लिया और श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब की सेवा हेतु श्री अमृतसर आकर रहने लगे।

दूसरी तरफ सन् १७६१ ई में अहमदशाह अब्दाली मरहट्टों (मराठों) को पानीपत के मैदान में हरा चुका था। सिक्ख किसी भी तरह उसके काबू में नहीं आ रहे थे। उसने अपने सूबेदारों को यह हुक्म किया हुआ था कि सिक्खों का पूरी तरह से नामो-निशान मिटा दिया जाए।

सिक्खों को खत्म करने की कई मुहिमों में असफल रहने के बाद अहमदशाह अब्दाली ने नवंबर, १७६४ ई में हिंदोस्तान पर अपने तीस हज़ार सैनिकों के साथ हमला किया। वह तेज़ी से सिक्खों के केंद्र श्री हरिमंदर साहिब की तरफ बढ़ा।

अब्दाली द्वारा श्री हरिमंदर साहिब पर हमला करने की नीति की ख़बर सुनकर वहां पर मौजूद शूरवीर योद्धा बाबा गुरबख़श सिंघ और उनके साथ मौजूद अन्य ३० सिंघों ने श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा हेतु अब्दाली से टक्कर लेने लिए कमरकस्से (तैयारी) कर लिए। बाबा गुरबख़श सिंघ और उनके साथियों द्वारा अब्दाली के साथ धर्म-युद्ध करने के लिए जो तैयारियां की गईं उनके बारे में भाई रतन सिंघ (भंगू) 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में ज़िक्र करते हैं :

बसतर शसतर पहिर सिंघ भए तबै सवधान।
गुरू ग्रंथ बाणी पढ़ी गुर नानक पग धर धयान ॥३७॥

परमात्मा का ध्यान धरकर बाबा गुरबख़श सिंघ और उनके ३० साथियों ने पांच पउड़ियां 'अनंद साहिब' का पाठ किया, जिसका ज़िक्र स. रतन सिंघ (भंगू) ने किया है :

पंज पौड़ी सिंघ अनंद पढायो, गुर गणेश जिम ग्रंथ पुजायो।
बिआहि वांग कीयो जग्ग उछाहि, सिंघन बहाइ खुलायो कड़ाहि ॥३७॥

पांच पउड़ी 'अनंद साहिब' का पाठ करने के उपरांत बाबा गुरबख़श सिंघ ने श्री हरिमंदर साहिब की अंतिम सांस तक रक्षा करने की

**२९४६/७, बाज़ार लुहारां, चौंक लछमणसर, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ८७२७८००३७२*

अरदास की :

हरिमंदर के हजूर इम खड़ कर करी अरदास।
सतिगुर सिक्खी संग निभै, सीस केसन के साथ ॥४८॥

इसके उपरांत बाबा जी और उनके साथियों ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर अपना मोर्चा लगाया। बाबा गुरबख़्श सिंघ की युद्ध करने की तैयारी का चित्रण एक दूल्हे के रूप में करते हुए स. रतन सिंघ (भंगू) का कथन है :

श्री गुरबख़्शै सिंघ जु होइ बहयो बुंगै तयार ॥
जन लाड़ा खुशिआं चितै सुन सुंदर बहु मुटियार ॥५३॥

इतने समय में अहमदशाह अब्दाली की तीस हज़ार की गिनती में फौज मारधाड़ करती हुई श्री हरिमंदर साहिब परिसर में प्रवेश कर गई। इतिहास गवाह है कि १ दिसंबर, १७६४ को जब अब्दाली ने श्री हरिमंदर साहिब पर हमला किया तो बाबा जी ने केवल अपने ३० साथियों के साथ गुरबाणी के महावाक्य *"सिरु दीजै काणि न कीजै"* पर डटकर पहरा देते हुए मोर्चा लगाकर श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा की। केवल ३० सिंघों ने ३० हज़ार गिलजों पर इतना भयानक हमला किया कि देखते ही देखते सैकड़ों गिलजे मौत के मुंह में जा समाए। इस घमासान युद्ध में गिलजों के पास लंबी दूरी तक मार करने वाले हथियार और तीर कमान थे। उन्होंने अपने बचाव के लिए संजोह भी पहन रखी थी। इधर सिंघों के पास केवल रिवायती हथियार, कृपाणें और बरछे इत्यादि ही थे। घमासान युद्ध में आगे बढ़ रहे सिंघों में से काफी सिंघ शहीद हो गए। सिंघों का जोश, जुनून और गुरु-घर के प्रति मर मिटने की भावना अफ़गानों के मारू हथियारों का मुंह चिड़ा रही थी। बाबा गुरबख़्श सिंघ सभी सिंघों का हौसला बढ़ाते हुए उनमें धर्म-युद्ध का चाव ज़िंदा रखने का प्रयास कर रहे थे।

थोड़े-से सिंघों ने अब्दाली की फौज को मुश्किल में डाल रखा था। गिलजे दूर से गोलियों और तीरों से हमला कर रहे थे, मगर दूर से ही। सिंघों के पास आने की, उनके साथ हाथों-हाथ लड़ने की उनमें हिम्मत न थी :

गोली छाडै दूर कड़ ओ धरी तीरन की मार।
सिंघ गए चीर सरीर को परै न ज़खम सुमार ॥७३॥

जैसे-जैसे शहीद होने वाले सिंघों की संख्या बढ़ रही थी शेष बचे सिंघों का जोश और भी बढ़ने लगा। बाबा गुरबख़्श सिंघ हमलावरों के दांत खट्टे करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहे थे। दुश्मनों ने काफी समय तक बाबा जी के पास आने की हिम्मत नहीं की, मगर जब देखा कि बाबा जी कुछ ही सिंघों के साथ रह गए हैं तो उन्होंने एक साथ तीरों और गोलियों से हमला करना शुरू कर दिया। अहमदशाह अब्दाली की फौजों के साथ युद्ध करते हुए, अपने गुरुधाम की रक्षा करते हुए बाबा गुरबख़्श सिंघ अपने साथियों सहित शहीदी प्राप्त कर गए।

उस समय अब्दाली के साथ आया काजी नूर मुहम्मद सिंघों और गिलजों के दरमियान हुए इस युद्ध में सिंघों की दिलेरी और बहादुरी के बारे में ज़िक्र करता हुआ लिखता है :

"जब बादशाह और शाही लश्कर (गुरु के) चक्क (श्री अमृतसर) पहुंचा तो वहां कोई भी काफिर (सिक्ख) नज़र नहीं आया। परंतु कुछ आदमी (सिंघ) गढ़ी (बुंगे) में टिके हुए थे कि अपना खून बहा दें और उन्होंने अपने-आप को गुरु पर कुर्बान कर दिया। जब उन्होंने बादशाह और इसलामी लश्कर को देखा तो वे सभी बुंगे में से निकल आए। वे सभी गिनती में तीस थे।

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

जन आवन का इहै सुआउ

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

विश्व के सभी धर्म-ग्रंथ सम्मानयोग्य हैं क्योंकि वे बहुमूल्य प्रेरणाप्रद विचारों से समृद्ध हैं और मन को परमात्मा की महानता के साथ जोड़ने वाले हैं। महापुरुषों ने ज्ञान का जो प्रकाश संसार को दिया वह इनमें समाहित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विशिष्टता केवल सदजीवित सतिगुरु के रूप में ही नहीं है बल्कि ऐसे सतिगुरु के रूप में है जो खुद श्रद्धालु के मन के निकट पहुंचकर उसके मन और मस्तिष्क के तल पर संवाद और सम्बंध स्थापित करता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतिष्ठा एक ऐसे सतिगुरु के रूप में है जो अपने गुरसिक्ख के मन की भाषा में बात करके कब उसे अपने साथ जोड़ ले पता ही नहीं चलता। युगों से अवरुद्ध मस्तिष्क और मन के लिए यह विस्मयकारी है कि मोक्ष इस तरह पाया जा सकता है :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

प्राय: सभी धर्मों ने मोक्ष को मानव-जीवन का लक्ष्य माना और मोक्ष प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न मार्ग दिखाये। ये मार्ग कठोर साधना, त्याग, बलिदान से भरे थे। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि बेवजह घोर कष्ट उठाना प्रयोजनहीन है। उन्होंने कहा कि जो मनुष्य परमात्मा का सिमरन करता है और अपने जीवन के सारे कर्मों को इस सिमरन अर्थात् प्रभु के विचार से जोड़कर जीवन व्यतीत करता है परमात्मा उस पर भरपूर कृपा करके उसे मोह-माया, विकारों से मुक्त कर देता है, जिससे उसका जीवन आनंद से ओत-प्रोत हो जाता है। ऐसा मनुष्य अन्य लोगों को भी उपदेश देकर उन्हें परमात्मा के साथ जोड़ता है। इस तरह मोक्ष की प्राप्ति को विचार-कर्म-समाज के साथ जोड़ दिया गया।

श्री गुरु नानक साहिब से पूर्व तक की समझ यही थी कि परमात्मा की वंदना, पूजा-अर्चना ही धर्म है। इस हेतु नाना कर्मकांड समय-समय पर स्थान लेते रहे। गुरु साहिब ने वंदना-अर्चना को धर्म का एक चरण माना और तमाम कर्मकांडों का खंडन करते हुए इसे निरोल मन से जोड़कर देखा। परमात्मा का सिमरन मन में करना है और कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं, कुछ अलग से करने की आवश्यकता नहीं। घर-गृहस्थी, समाज, नगर का त्याग किए बिना भी परमात्मा से जुड़कर उसे पाया जा सकता है। बड़े-बड़े धार्मिक यज्ञों, अनुष्ठानों, विधियों, रीतियों आदि की भी आवश्यकता नहीं है। यदि मन में परमात्मा के विचार चल रहे हैं तो परमात्मा स्वयं ही मन में बस जायेगा :

मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥
निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥
(पन्ना ६९)

मनुष्य अपने मन को परमात्मा के साथ जोड़े, अपनी चेतना को परमात्मा में केंद्रित करे। नाम-सिमरन के बिना जन्म व्यर्थ चला जायेगा :

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३

जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥
जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥
जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥
नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥
(पन्ना ११५५)

जिसके मन में परमात्मा का नाम बस रहा है, उसकी महिमा राजा-महाराजा से भी बड़ी है। उसके सारे मनोरथ सफल होते हैं और उसे करोड़ों की संपदा जैसा सुख प्राप्त होता है अन्यथा जीवन का सुअवसर नाम के बिना गंवा देना पड़ता है।

सतिगुरु ने सुचेत किया है कि मनुष्य किसी भी पल भटक सकता है। उसे सदैव परमात्मा में चित्त को लगाये रखना है :

सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥
बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥
सासि सासि हम भूलनहारे ॥
तुम समरथ अगनत अपारे ॥ (पन्ना २६०)

यह सार तत्व है कि नाम-सिमरन के बिना छुटकारा नहीं है। मानव-जीवन नाम-सिमरन के लिए ही है, क्योंकि चौरासी लाख जीवों में मनुष्य ही ऐसा जीव है जो नाम-सिमरन के योग्य है :

जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥
गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥१॥
जिन्ह धुरि लिखिआ लेखु तिन्ही नामु कमाइआ ॥
दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥
अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईऐ ॥
(पन्ना ३६९)

नाम-सिमरन करने वाला गुरसिक्ख सतिगुरु की कृपा से उसकी महत्ता को समझ लेता है और परमात्मा की शरण में चला जाता है। ऐसा मनुष्य भाग्यशाली है जो नाम-सिमरन कर रहा है। परमात्मा स्वयं ही उस पर अपनी कृपा करता है। गुरसिक्ख जानता है कि संसार में नाम से बड़ी कोई पूंजी नहीं है इसलिए वह दिन-रात नाम-सिमरन और परमात्मा के यशगान में लगा रहता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में नाम-सिमरन की महानता का विशद वर्णन स्थान-स्थान पर मिलता है। इससे यह दृढ़ और स्पष्ट संदेश ग्रहण किया जा सकता है कि नाम-सिमरन नितांत व्यक्तिक और निज मन का अभ्यास है जिसके लिये किसी भी आयोजन की आवश्यकता नहीं। नाम-सिमरन का कोई विकल्प नहीं है। जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नाम-सिमरन एकाग्रचित्त अभ्यास है और परमात्मा की कृपा का मार्ग है। जिसे नाम का रस प्राप्त हो गया वह सदा ही इसमें लिप्त रहना चाहेगा, इसमें रम कर रह जायेगा :

जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥
बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥
जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥
जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥ (पन्ना २३६)

स्वर्ग की कल्पना आदि काल से मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रही है। सारे सुखों की कल्पनाएं स्वर्ग से जोड़ दी गई हैं और स्वर्ग में निवास की ललक बनी रहती है, जिसे कभी किसी ने प्रत्यक्ष नहीं देखा है। इसे मृत्यु के बाद का आकर्षण बना दिया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने एक अभिनव विचार रखा कि ऐसे एक स्वर्ग के नहीं अनेक स्वर्गों के सुखों को एक साथ इस जीवन में नाम-सिमरन करके भोगा जा सकता है, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रभु का निवास दूर आकाश में कहीं न दिखने वाले स्थान को बताया जाता है, ऐसा प्रभु नाम-सिमरन करने वालों को सहज ही

प्राप्त हो जाता है।

एक ओर जहां नाम-सिमरन की महिमा है वहीं इसे मनुष्य के आचरण के साथ जोड़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में धर्म के एक ऐसे आयाम को आगे लाया गया जो पूर्णत: उपेक्षित, अचिन्हित था जिसके कारण धर्म के आडंबर तो थे, दुराचरण का भी बोलबाला था। गुरु साहिबान ने कहा कि जो अंत:करण को परिवर्तित न कर दे वह धर्म नहीं है। नाम-सिमरन मनुष्य का पूर्णत: परिशोधन है।

सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥
जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥
दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥ (पन्ना ७२)

नाम-सिमरन से जीवन का ढंग बदल जाता है। मनुष्य के अहंकार आदि सारे विकार दूर हो जाते हैं और कुबुद्धि, सुबद्धि में बदल जाती है।

पूजा जाप ताप इसनान ॥
सिमरत नाम भए निहकाम ॥२॥
राज माल सादन दरबार ॥
सिमरत नाम पूरन आचार ॥ (पन्ना ११३७)

नाम-सिमरन से निष्काम की भावना आ जाती है और परमात्मा का नाम सब कुछ, सबसे उच्च दिखने लगता है जिससे मनुष्य का पूरा आचरण बदलकर शुद्ध हो जाता है और उसके कर्मों में परमात्मा का भाव प्रकट होने लगता है। वह जानता है कि सृष्टि का सृजन परमात्मा ने किया है और वही पूर्ण समर्थ है। परमात्मा ही सब कुछ करने वाला है। उसकी आज्ञा के बिना कुछ नहीं हो सकता। यह निर्णायक और अंतिम विचार मन में धारण करने वाला ही निष्काम बनता है।

अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥
किरत कमावन सरब फल रवीऐ हरि निरति ॥३॥
हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध ॥
मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥
(पन्ना ८१६)

जो अपने सारे कर्म परमात्मा को सर्वसमर्थ समझकर उसकी आज्ञा और उसके मंतव्य के अनुकूल करता है उसे ही नाम-सिमरन का फल प्राप्त होता है। वह अपने कर्मों के साथ "स्व" को नहीं जोड़ता क्योंकि वह जानता है कि उसमें कोई सामर्थ्य है ही नहीं। ऐसे नाम-सिमरन और आचरण करने वालों को परमात्मा अंध कूप की गहराई से भी निकालकर उबार लेता है। नाम-सिमरन वाला अपने अंध कर्मों से श्रेष्ठ बन जाता है।

सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥
वडिआई वडा पाइआ ॥ (पन्ना ४६६)

नाम-सिमरन करने के साथ जो कभी मंदे कर्मों का ध्यान नहीं करता और अच्छे कार्य ही करता है वही धर्म की असली कमाई करता है। वह संयमित जीवन व्यतीत करता है और सांसारिक माया-जाल से मुक्त रहता है। उसका लोक-परलोक संवर जाता है। इससे समाज भी लाभान्वित होता है।

अंचलु गहि कै साध का तरण इहु संसारु ॥
पारब्रहमु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥२॥
साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥
अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥
(पन्ना २१८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की दृष्टि है कि

परमात्मा की उपासना, वंदना का फल व्यापक होना चाहिए जिससे पूरा परिवेश प्रभावित हो। परमात्मा के साथ जुड़ने में 'सरबत्त का भला' की दृष्टि काम करनी चाहिए। जब भावना निष्काम हो जायेगी तब यह दृष्टि सहज ही विकसित होने लगेगी। दूसरों को भी परमात्मा के साथ जोड़ने की भावना हो तो उनके अवगुण मिटाकर उन्हें शुभ कर्मों की प्रेरणा दें। अपना और दूसरों का उद्धार करने वाले ही परमात्मा को प्रिय हैं :

गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥
कुलु उधारे आपणा धंनु जणेदी माइआ ॥
(पन्ना १३८)

सिक्खों द्वारा की जाती दैनिक अरदास में सरबत्त का भला अंतिम रूप से मांगा जाता है। इसके बाद मांगने को कुछ भी नहीं रह जाता। यह अध्यात्म की ऐसी ऊंचाई है जिसे छू पाना प्रत्येक के वश में नहीं है। जिसने इसे छू लिया वह मुक्त हो गया। अवगुण अपने भी मिटाने हैं, दूसरों के भी। अपने मन में भी परमात्मा को बसाना है, दूसरों को भी ऐसी प्रेरणा देनी है। अपने लिए ही नहीं संसार के लिए भी मुक्ति मांगनी है। मानव-जीवन इसीलिए मिला है :

जन आवन का इहै सुआउ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥
(पन्ना २९५)

दीन-हीन, अवगुणों से भरे मनुष्य को आध्यात्मिकता के शिखर पर ले जाने वाले सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सामने शीश झुकाना ही *"जन आवन का इहै सुआउ"* को प्रमाणित करना है। ☸

शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ

(पृष्ठ ३१ का शेष)

वे थोड़ा-सा भी डरे, घबराए नहीं। उनको न कत्ल होने का डर था और न ही मौत का भय। वे गाज़ियों पर टूट पड़े और उलझते हुए अपना खून बहा गए। इस तरह सभी सिंघ कत्ल (शहीद) हो गए।"

बाबा गुरबख़्श सिंघ का अंतिम संस्कार श्री अकाल तख़्त साहिब के पिछवाड़े में किया गया। वर्तमान समय में उस स्थान पर बाबा गुरबख़्श सिंघ की वीरता की याद दिलाता हुआ 'गुरुद्वारा शहीदगंज बाबा गुरबख़्श सिंघ जी' सुशोभित है। यहां पर निरंतर श्री अखंड पाठ साहिब चलते हैं।

बाबा गुरबख़्श सिंघ का शहीदी दिवस हर वर्ष दिसंबर महीने में इस पावन स्थान पर श्रद्धा और सत्कार से मनाया जाता है।

सहायक पुस्तकें :
१. सिक्ख पंथ विश्व कोश (डॉ. रतन सिंघ)
२. परसिद्ध सिक्ख शखसीअतां (संपादक स. रूप सिंघ)
३. सिक्ख इतिहास (प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ) ☸

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सेवा की महानता

-डॉ. रछपाल सिंघ*

सेवा से तात्पर्य है कि कोई भी काम नि:शुल्क रूप में करना, जिससे व्यक्ति को मानसिक संतुष्टि हो, जिसमें परोपकार की भावना हो, जिससे अपना और दूसरों का भला हो। वास्तव में सेवा एक साधना मार्ग है, जिसमें अपनी मानसिक प्रसन्नता के साथ-साथ मानवता के भले की बात होती है। सांसारिक स्तर पर उपजीविका कमाने की खातिर किए गए काम को भी सेवा मान लिया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार सेवा हउमै का त्याग करके मानवता के भले के लिए किया गया ऐसा कार्य है, जिससे प्रभु-पिता की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है।

गरीब एवं ज़रूरतमंद की सहायता भी सेवा है। गरीब के बच्चों की विद्या प्राप्ति में सहायता करना, मकान बनाकर देना, उनका विवाह करना भी सेवा है। गांव-शहर के रास्ते साफ करना, वातावरण प्रदूषण रहित बनाना, सार्वजनिक स्थानों पर पानी के नल आदि लगाना, बीमारों की मेडिकल सहायता इत्यादि सेवा की कोटि में आते हैं। इससे मन को प्रसन्नता मिलती है तथा विकारों एवं अहं का नाश होता है। संगत के बरतन साफ करने, जल सेवा, लंगर सेवा, पंखे की सेवा, गुरबाणी पढ़ने-पढ़ाने के लिए धार्मिक पुस्तकें, पोथियां आदि खरीदकर नि:शुल्क बांटना, दूसरों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संग जोड़ना, खंडे बाटे का अमृत छकाना, कीर्तन करना आदि भी सेवा है।

सेवा किसी प्रकार की भी हो, सेवा करने का प्रथम चरण अपने अहं का त्याग करना और किसी प्रकार का दिखावा नहीं करना है। गुरबाणी का पावन वचन है :

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥
(पन्ना ४७४)

अगर प्रभु-प्राप्ति की मन में इच्छा हो तो मानवता की सेवा अनिवार्य है :

-विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ *(पन्ना २६)*

-सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मंने ॥ *(पन्ना ३१४)*

सेवा तन, मन, धन से की जा सकती है। सेवा की कोई गिनती-मिनती नहीं करनी चाहिए कि मैंने इतनी सेवा की, मैंने वो सेवा की, मैं इतने वर्षों से सेवा कर रहा हूं। गिनती-मिनती की सेवा कभी भी प्रवान नहीं होती। लोगों को दिखाने के लिए की गई सेवा व्यर्थ है :

गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥
(पन्ना १२४६)

प्रभु-नाम-सिमरन से सांसारिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैं। नाम की सेवा सभी सेवाओं से श्रेष्ठ है। गुरु-शबद की विचार करनी भी सेवा है :

गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥
हउमै मारे करणी सारु ॥ *(पन्ना २३३)*

ऐसे महापुरुष जो आप नाम-सिमरन में

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

बाल-कल्याण और बाल-साहित्य

-श्री विनोद चंद्र पांडेय*

आज के बालक, भविष्य में राष्ट्र के निर्माता एवं कर्णधार बनेंगे। इन्हीं बच्चों में से राजनीतिज्ञ, समाज-शास्त्री, सुधारक, साहित्यकार, डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक आदि बनकर सामने आएंगे। बालक किसी भी देश की अमूल्य निधि हैं, इसमें कोई संदेह नहीं।

ऐसी स्थिति में प्रत्येक राष्ट्र और समाज का यह परम पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि वह बाल्यावस्था से ही बालकों के सम्यक विकास की ओर ध्यान दे, जिससे वे शारीरिक, मानसिक नैतिक, आध्यात्मिक तथा चारित्रिक दृष्टि से विकसित हो सकें और देश के सुयोग्य नागरिक बन सकें। जिस प्रकार सुदृढ़ आधार-शिला के बिना विशाल भवन का निर्माण असंभव है, उसी प्रकार बाल्यावस्था के समुचित विकास के बिना बालक का भविष्य उज्जवल नहीं बनाया जा सकता। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों में अच्छे संस्कारों के अंकुर उगाए जाएं, जिससे उनमें साधना, सद्‌विचार तथा सद्‌बुद्धि का उदय हो; उनमें आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं सद्‌भावना की ज्योति प्रज्वलित हो।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी ने राष्ट्र के नाम अपने संदेश में कहा था कि "हमें अपने बच्चों पर गर्व है, चाहे वे किसी जाति, रंग, धर्म अथवा सामाजिक स्तर के हों। हमें उनके भीतर करुणा, सहिष्णुता और मानव-वर्ग की एकता के पुरातन आदर्शों की भावना जागृत करनी चाहिए।"

भूतपूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने भी बाल-हित के संबंध में अपने विचार इन शब्दों में प्रकट किये थे, "बच्चों की दुनिया भोलेपन, हर्ष और प्यार की दुनिया है। बच्चे भविष्य की सभ्यता का आधार हैं। इस तरह वे सदैव दुनिया को नवीनता प्रदान करते रहते हैं। इन्हीं के बल पर मानवता उज्जवल भविष्य की आधार-शिला रख सकती है।"

भारतीय संविधान में भी शिशुओं के कल्याण, उनकी शिक्षा और उनके स्वस्थ विकास पर ज़ोर दिया गया है, ताकि वे देश के उपयोगी नागरिक बन सकें। जहां बच्चों के स्वास्थ्य और उनके जीवन-स्तर में सुधार लाने के लिए प्रयत्न अपेक्षित हैं वहीं उनकी शिक्षा-दीक्षा के उचित प्रबंध और उनके मानसिक विकास की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

बालकों को सर्वांगीण रूप से विकसित करने, उनमें उच्च आदर्शों का बीजारोपण करने तथा उनको सद्‌गुणों को अपनाने हेतु प्रेरित करने के लिए बाल-साहित्य द्वारा बच्चों को गौरवमय अतीत का ज्ञान कराया जा सकता है, देश-विदेश की विभिन्न महत्त्वपूर्ण घटनाओं और वस्तुओं से तथा विज्ञान के आविष्कारों से उन्हें परिचित कराया जा सकता है।

बाल-कल्याण के लिए बाल-साहित्य की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके विभिन्न पक्षों पर विचार कर इसका उचित

*सी-१०, सेक्टर जे, अलीगंज, लखनऊ (उ. प्र.)-२२६०२४

मूल्यांकन होना चाहिए तथा बालकों को श्रेष्ठ बाल-साहित्य की जानकारी देने व पढ़ाने हेतु सामग्री उपलब्ध कराने की विभिन्न योजनाएं बनानी चाहिए, जिनसे भावी पीढ़ी अधिकाधिक लाभान्वित हो सके।

यद्यपि हिंदी में प्रचुर बाल-साहित्य लिखा गया है किंतु उसके प्रति अभी तक उपेक्षा-भाव ही दर्शाया जाता रहा है। यद्यपि डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, डॉ. राष्ट्रबंधु, डॉ. मस्तराम कपूर 'उर्मिल' आदि ने बाल-साहित्य पर शोध-प्रबंध भी लिखे हैं तथापि केवल डॉ. देवसरे के शोध-प्रबंध के अतिरिक्त अन्य शोध-प्रबंधों का प्रकाशन नहीं हो सका। श्री निरंकारदेव सेवक ने हिंदी 'बालगीत-साहित्य' नामक उपयोगी कृति लिखकर हिंदी बाल-साहित्य की सराहनीय सेवा की है। अभी तक हिंदी बाल-साहित्य का कोई प्रमाणिक इतिहास नहीं लिखा गया तथा हिंदी-साहित्य के इतिहास की पुस्तकों में भी बाल-साहित्य के संबंध में कोई अलग अध्याय साहित्य के इतिहास-लेखकों ने नहीं रखा। बाल-साहित्य का प्रमाणिक इतिहास प्रकाशित हो जाने पर बच्चों को अच्छे बाल-साहित्यकारों और उनकी उपयोगी कृतियों का ज्ञान हो सकेगा, जिन्हें पढ़कर वे अपने जीवन का विकास सम्यक रूप से कर सकेंगे और ऐसे साहित्य से बचेंगे, जो उन्हें भ्रमित करता है और सत्पथ से विचलित करता है।

वस्तुत: श्रेष्ठ बाल-साहित्य के प्रकाशन और प्रचार की प्रमुख समस्या है। इस क्षेत्र में अनेक प्रकाशकों ने अच्छा कार्य किया है किंतु अभी और भी प्रयास करने की आवश्यकता है। बहुत-से बाल-साहित्यकारों की सुंदर कृतियां प्रकाशन में नहीं आ पा रही हैं, जिससे बच्चे उनको पढ़ने से वंचित रह जाते हैं। इस संबंध में प्रकाशकों और संस्थाओं को तो अपने दायित्व का निर्वाह करना ही चाहिए किंतु शासन का भी कर्त्तव्य है कि अच्छी कृतियों को प्रकाशित करने में सहायता दे और प्रोत्साहन प्रदान करे। जूनियर बेसिक स्कूलों के पुस्तकालयों तथा अन्य पुस्तकालयों और वाचनालयों के लिए बाल-साहित्य की अच्छी पुस्तकों के क्रय से उनके प्रकाशन को प्रोत्साहन मिलेगा और उन्हें बच्चे पढ़कर अपना वर्तमान और भविष्य सुधार सकेंगे।

हिंदी में अनेक बाल-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं और कुछ समाचार-पत्र भी अपने बाल-स्तंभों में बालोपयोगी रचनाएं प्रकाशित करते हैं। सभी पत्रिकाओं का अपना अलग-अलग दृष्टिकोण है। यदि भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'बाल-भारती' के समान प्रादेशिक सरकारों द्वारा भी एक प्रतिनिधि बाल-पत्रिका का प्रकाशन किया जाए, जिसमें बाल-साहित्य सही और उपयोगी रूप में प्रस्तुत किया गया हो और वह बालकों को पढ़ने के लिए सरलता से सुलभ कराई जाए तो बच्चों का विशेष कल्याण हो सकता है। उ. प्र. हिंदी संस्थान से 'बाल-वाणी' प्रकाशित की जा रही है।

प्रकाशन के साथ-साथ प्रोत्साहन का भी विशेष महत्त्व है। बाल-साहित्य की बेहतरीन कृतियों को पुरस्कृत करने और श्रेष्ठ बाल-साहित्यकारों को सम्मानित करने से भी बाल-साहित्य के विकास की गति बढ़ाई जा सकती है। इससे जहां बाल-साहित्यकारों को अच्छी कृतियां तैयार करने हेतु उत्साह प्राप्त होगा, वहीं बालकों को अच्छा बाल-साहित्य भी पढ़ने को मिल सकेगा, जिससे वे अपनी ज्ञान-पिपासा शांत कर सकेंगे और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकेंगे।

बाल-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी बाल-कल्याण के लिए आवश्यक है। बाल-

नाटकों का प्रदर्शन, बाल-कवि सम्मेलनों, बाल-संगीत सभाओं तथा बाल-प्रतियोगिताओं का आयोजन इस दृष्टि से उपयोगी होगा। बाल-साहित्य विषय पर परिचर्चा-गोष्ठियां भी बाल-साहित्य के विकास में सहायक होंगी। इससे बच्चे अपने प्रिय रचनाकारों का सान्निध्य प्राप्त कर सकेंगे और उनके निकट संपर्क में आने से उनसे कुछ सीख सकेंगे। बाल-कविता और बाल-साहित्य के प्रति उनमें रुचि उत्पन्न हो सकेगी। इस प्रकार के आयोजन जहां बाल-कल्याण में निरत संस्थाओं द्वारा किए जाने चाहिए, वहीं बाल-कल्याण से संबंध रखने वाले शासन के विभिन्न विभागों द्वारा भी इन्हें आयोजित किया जाना चाहिए। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर इनका आयोजन होने से व्यापक प्रचार की अधिक संभावना है। बड़े नगरों के साथ-साथ छोटे नगरों और ग्रामीण अंचलों में भी इस प्रकार के समारोह संपन्न होने से हर वर्ग और क्षेत्र के बालकों को इनका लाभ मिल सकेगा।

बच्चों में धर्म के सिद्धांतों को दृढ़ करवाने हेतु तथा उन्हें धर्म के क्षेत्र में विकासशील बनाने के लिए हमारी धार्मिक जत्थेबंदियों को अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। यह बात प्रमाणित सत्य है कि बिना धर्म-सिद्धांतों के मानव में सद्विचारों का उत्पन्न होना असंभव है।

शासन द्वारा यदि केंद्रीय और प्रादेशिक स्तर पर बाल-साहित्य अकादमी की स्थापना की जाए और उसमें बाल-साहित्यकारों का सहयोग लिया जाए तो बाल-साहित्य के विकास को सही दिशा मिल सकेगी और बच्चों को अच्छे से अच्छा साहित्य पढ़ने को उपलब्ध हो सकेगा, जो उनके चरित्र-निर्माण में सहायक होगा।

विश्वास है कि बाल-साहित्यकार, बाल-साहित्य के प्रकाशक, बाल-कल्याण संस्थाएं, शासन और प्रशासन के विभिन्न विभाग बाल-कल्याण के लिए बाल-साहित्य के मूल्यांकन, सृजन, प्रचार-प्रसार में अपने दायित्व का निर्वाह करेंगे, जिससे बच्चों का भविष्य उज्जवल हो सकेगा।

('पंजाब सौरभ' से आभार सहित)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सेवा की महानता

(पृष्ठ ३६ का शेष)

दिन-रात लीन रहते हैं, दूसरों को भी नाम-सिमरन में लगाते हैं, अपने संगी-साथियों को केवल एक ईश्वर के साथ जोड़ते हैं, धन्य हैं, गुरबाणी में ऐसी सेवा ही प्रवान है :

नामु हमारै पूजा देव ॥
नामु हमारै गुर की सेव ॥ (पन्ना ११४५)
कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥
(पन्ना १३७३)

सिक्ख इतिहास में दर्ज है कि सेवक अपने गुरु की सेवा करके उसमें विभेद हो गया। गुरु और सेवक में कोई अंतर न रहा। सेवक गुरु का हुक्म मानकर गुरु में ही समा गया। गुरु सेवक और सेवक गुरु बन गया। श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी ने अपने सतिगुरु जी की निष्काम और त्याग-भावना से ऐसी सेवा की जिसके फलस्वरूप उनको गुरु-पद की प्राप्ति हो गई :

हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥
(पन्ना ४४९)

महाकवि भाई संतोख सिंघ

*-स. करनैल सिंघ (सरदार पंछी)**

काबिल-ए-सद[१] सजदा-रेज़ी[२] कामरां[३] संतोख सिंघ ! सहरा-ए-तारीख़[४] में एक सारबां[५] संतोख सिंघ !
प्यारे वालिद[६] देवा सिंघ, माई रजादी वालदा[७], जा-ए-पैदाइश[८] है नूरी दी सरां संतोख सिंघ !
हरिमंदर साहिब के ग्रंथी ज्ञानी संत सिंघ, जिनसे पढ़ कर हो गये आलम[९]-जुबां संतोख सिंघ !
बिखरे सिक्ख इतिहास के सब मोती यकजा[१०] कर दिये, यूं सजाये, हो गये वो कहकशां[११] संतोख सिंघ !
ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज' लिखा इस अंदाज़ से, तीरगी[१२] में बन गया इक शम्मअदां[१३] संतोख सिंघ !
आ गया इस अदबी दुनिया में नया इक नाम कोश, जिससे आलम में हुआ चिट्ठी-रसां[१४] संतोख सिंघ !
'गरब गंजनी', 'वाल्मीकि रामायण', 'आतम प्राण' और 'सीहरफी' पंजाबी जान-ए-जां[१५] संतोख सिंघ !
मेज़बां जब तक रहे भगवान सिंघ बूड़ियां, लंबे अर्से तक थे उनके मेहमां संतोख सिंघ !
करम सिंघ महाराजा पटियाला भी थे इनके मुरीद, वो वहीं पर बैठते थे, हों जहां संतोख सिंघ !
उदे सिंघ कैथल के राजा शायरी पर थे फ़िदा, कर दिये मसरूर[१६] यूं जादूब्यां[१७] संतोख सिंघ !
इस ज़मीं पर जो हकीकत बेवजह ख़ामोश थी, हो गये ये उसके गोया[१८] तर्जुमां[१९] संतोख सिंघ !
लफ़ज-ए-मौजूं[२०] की निशिस्तें[२१] आपने कीं बार-बार, इसलिए ही है मुकम्मल दासतां संतोख सिंघ !
खूबरू[२२] अलफ़ाज़ का बख़्शा तख़य्युल[२३] को लिबास, यूं हुए खुद अपने पर भी मेहरबां संतोख सिंघ !
इल्म-ओ-फ़न की कोई भी सरहद न बनने दी कभी, इक ख़्याल-ए-खुशनुमा था बेकरां[२४] संतोख सिंघ !
इस्तआरे[२५] और कनाए[२६] मालूमात[२७]-ए-तशबीहात[२८], है अरुज़ी-फ़न[२९] का भी इक आस्तां[३०] संतोख सिंघ !
कश्ती-ए-तशरीह[३१] सिक्ख इतिहास थी गिरदाब[३२] में, आई साहिल[३३] पर बने जब बादबां[३४] संतोख सिंघ !
लिख के गुरुओं का जीवन-फ़लसफ़ा[३५] मनजूम[३६] तर, हो गये हर दिल की धड़कन शादमां[३७] संतोख सिंघ !
सात जन्मों की तपश इक पल में गायब हो गई, दिल के जिस आंगन गया अब्र-ए-रवां[३८] संतोख सिंघ !
हर क़लम उस क़लम को करता है फ़र्शी सलाम[३९], जिस क़लम ने कर दिया फ़ख्र-ए-ज़मां[४०] संतोख सिंघ !
शायरी उनकी रवां[४१] है आबशारों[४२] की तरह, जिनमें चलता जाये है आब-ए-रवां[४३] संतोख सिंघ !
हर तरह की गुमरही[४४] को भी किनारे कर दिया, खुद जरस[४५] थे और मीर-ए-कारवां[४६] संतोख सिंघ !
होगा मैहव-ए-गुफ्तगू[४७] हर फूल से, तितली से भी, मिल गया 'पंछी' को भी इक गुलसितां संतोख सिंघ !

१. सद = सौ बार; २. सजदा रेज़ी = प्रणाम; ३. कामरां = गुणवान; ४. सहरा-ए-तारीख़ = इतिहास का मरुस्थल; ५. सारबां = ऊंट-सवार; ६. वालिद = पिता; ७. वालदा = माता; ८. जा-ए-पैदाइश = जन्म-स्थान; ९. आलिम = विद्वान; १०. यकजा = एकत्र; ११. कहकशां = आकाश-गंगा; १२. तीरगी = अंधेरा; १३. शम्मअदां = मोमबत्तियां; १४. चिट्ठी-रसां = पत्र-वाहक; १५. जान-ए-जां = प्रिय; १६. मसरूर = मस्त; १७. जादूब्यां = मनमोहक वक्ता; १८. गोया = बोलने वाला; १९. तर्जुमां = अभिवक्ता; २०. मौजूं = उचित; २१. निशिस्त = बैठक; २२. खूबरू = सुंदर; २३. तखय्युल = कल्पना; २४. बेकरां = असीम; २५. इस्तआरे = काव्य-शास्त्र का एक बिंदु; २६. कनाए = इशारे; २७. मालूमात = जानकारी; २८. तशबीहात = तुलना; २९. अरुज़ी-

*२५९, फेस-३, डुगरी अर्बन अस्टेट, लुधियाना-१४१०१३, फोन: ९४१७०९१६६८

फन = काव्य-कला; ३० आस्तां = ठिकाना; ३१ तशरीह = व्याख्या; ३२. गिरदाब = मंझधार; ३३. साहिल = किनारा; ३४. बादबां = नाव का पाल; ३५. फ़लसफ़ा = सिद्धांत; ३६, मनजूम = छंदबद्ध; ३७ शादमां = प्रसन्न; ३८. अब्र-ए-रवां = चलता-फिरता बादल; ३९. फर्शी सलाम = झुक कर प्रणाम करना; ४०. फ़ख्र-ए-ज़मां = युग का गौरव; ४१. रवां = गतिमान; ४२. आबशारों = जल-प्रपात; ४३. आब-ए-रवां = गतिमान जल; ४४. गुमरही = रास्ता भूलना; ४५. जरस = यात्रियों को जगाने वाला घंटा; ४६. मीर-ए-कारवां = यात्री टोले का नेता; ४७. मैहव-ए- गुफ्तगू = बातचीत में व्यस्त

सदाचार

कुशल प्रशासक, कुशल प्रबंधक।
काबिल नेता, योग्य चिकित्सक।
मेधावी अभियंता और शिक्षक।
सफल व्यापारी, श्रमिक औ सेवक।
सभी ज़रूरी, नहीं कोई शक।
उन्नति हेतु सब आवश्यक।
लेकिन मेरा अटल विचार।
सदाचार बिन सब बेकार।

सदाचार है नींव का पत्थर।
उन्नति-महल खड़ा हो जिस पर।
आज यदि बुनियाद डोलती।
उन्नति की सब पोल खोलती।
सच्ची उन्नति की पहचान।
बनते हों अच्छे इंसान।
बाकी सब कुछ उसके बाद।
पहले हो सुदृढ़ बुनियाद।

यह कैसा परिहास !

गरीब का शोषण।
अमीर का पोषण।
ईमानदार की खिंचाई।
बेईमान की बड़ाई।
नैतिकता किताब में।
भ्रष्टता हिसाब में।
अधिकारों की बात।
कर्त्तव्यों से घात।
बदनामों का नाम।
सच्चे हैं गुमनाम।
धर्म-क्षेत्र में माया।
आडंबर ही छाया।
शिक्षा चरित्रहीन।
धन-चिंतन में लीन।
न्याय-प्रक्रिया मंद।
अन्यायी स्वच्छंद।

चिकित्सा हुई उद्योग।
स्वयं बन गई रोग।
आरक्षण की घुट्टी।
प्रतिभाओं की छुट्टी।
निज भाषा से द्रोह।
अंग्रेजी से मोह।
जड़ों की उपेक्षा।
विकास की अपेक्षा।
प्रकृति प्रति कृतघ्न।
भौतिकता में मग्न।
त्याग को भुलाया।
भोग ने रुलाया।
संस्कृति को गरियाते।
विकृति को अपनाते।
कहते इसे विकास।
यह कैसा परिहास!

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो. : ०९४११६०७६७२

गुरबाणी चिंतनधारा : ८६

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

उन्नीसवीं असटपदी

सलोकु ॥
साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥
(पन्ना २८८)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी इस सलोक में स्पष्ट करते हैं कि हरि-भजन के बिना कोई भी वस्तु जीव के साथ नहीं जाती। जीव के द्वारा आजीवन कमाया धन इस संसार से कूच करते समय राख के सदृश्य है। प्रभु-सिमरन को सर्वोत्तम धन मानते हुए गुरु साहिब ने सच्चे धन को कमाने की हिदायत दी है।

गुरु पातशाह फ़रमान करते हैं कि परमेश्वर की बंदगी (नाम-सिमरन) के बिना जीव के साथ कुछ भी नहीं जाता। जीव के द्वारा सारी ज़िंदगी अनेक उपक्रमों से कमाया गया धन इस जगत से चलते वक्त उसके लिए राख के समान है। परमेश्वर का नाम ही सार पदार्थ अर्थात् सच्चा धन है, इसलिए इसी धन को कमाने की ओर ध्यान देना चाहिए।

गुरु पातशाह उपरोक्त सलोक में माया के पीछे दीवाने हुए लोगों को समझाते हैं कि नाम के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु व्यर्थ है। चाहे वह कितनी भी मशक्कत से हासिल की जाए, मगर उस पर लगाई गई सारी ऊर्जा, समय किसी काम नहीं आता, क्योंकि वह वस्तु जीव के साथ नहीं जा सकती। जीव के साथ जाता है तो केवल नाम-धन। यही जीव का लोक-परलोक में सच्चा साथी है एवं सच्चे सुख का साधन है। गुरबाणी में अनेक स्थानों पर सच्चे नाम की महिमा का गुणगान किया गया है। साथ ही माया को छार (राख) सदृश्य बताकर असली नाम-धन कमाने का पावन उपदेश दिया गया है। माया को असार (सार रहित) तथा नाम को सार (सार-तत्वपूर्ण) माना गया है :

-नानक दास इहु कीआ बीचारु ॥
बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥
(पन्ना ११३७)

-मन रे नाम को सुख सार ॥
आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥
(पन्ना १२२३)

-बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
(पन्ना १३४)

परमेश्वर के अमृतमयी नाम की कमाई करना ही सर्वश्रेष्ठ धन कमाना है और यही जीव का प्राण-धन है। यही धन जीव के साथ जाता है, बाकी सब कुछ यहीं धरा रह जाता है।

असटपदी ॥
संत जना मिलि करहु बीचारु ॥
एकु सिमरि नाम आधारु ॥
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥
चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥
द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥

****२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३***

संत जना का निरमल मंत ॥
एक आस राखहु मन माहि ॥
सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने १९वीं असटपदी की पहली पउड़ी में कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें समस्त रोगों की एक औषधि बताई है, वो है अकाल पुरख पर विश्वास रखते हुए उसका सिमरन करना। अन्य सभी तरह के उपायों को हृदय से विस्मृत कर (भुलाकर) संत-जनों से मिलकर हृदय-घर में यह विचार करनी है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि संत पुरुषों से मिलकर अर्थात् परिपूर्ण परमेश्वर में विश्वास रखने वाले तथा उसी में एक रूप हुए संतों से मिलकर प्रभु के गुणों की विचार करो। परमेश्वर की बंदगी करो और उसी के नाम-सिमरन को जीवन का आधार बनाओ। हे मित्र-जनो! अन्य समस्त साधनों का त्याग कर दो अर्थात् सभी दुनियावी सुखों के साधनों को भुलाकर केवल प्रभु के सुंदर चरण-कमलों को हृदय में बसा लो। वही सच्चा सहारा है, इस भवसागर से पार उतारने हेतु। परमेश्वर सब कुछ करने एवं जीवों से करवाने की सामर्थ्य रखता है। उसके नाम रूपी सुंदर नाम-पदार्थ को दृढ़तापूर्वक पकड़ लो। इस धन को संग्रहित करके तुम भाग्यशाली बन जाओगे। संत-जनों का यही निर्मल एवं पावन उपदेश है। अंतिम पंक्ति में भी एक के ही विश्वास को दृढ़ करवाते हुए गुरु साहिब पावन फरमान करते हैं कि अपने मन में सिर्फ एक प्रभु का ही दृढ़ विश्वास रखो, जिसके फलस्वरूप तुम्हारे समस्त रोग मिट जायेंगे।

उपरोक्त असटपदी में गुरु साहिब ने एक ईश्वर की आराधना करने की हिदायत की है। वही सर्वशक्तियों का मालिक है, सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है। ऐसे प्रभु की आराधना एवं विश्वास समस्त दुखों से छुटकारा दिलवाकर हृदय-घर में सुखों का प्रकाश करता है। गुरबाणी में ऐसे नाम-धन का संचय करने वालों को ही सच्चा धनवान माना गया है। बाकी सभी तरह के धन-पदार्थ यहीं धरे रह जाते हैं। केवल प्रभु का नाम ही दरगाह में काम आता है। संत-जनों की संगत में नाम जपने और इस तरह की सुंदर विचार करने का संकेत किया गया है। गुरबाणी-प्रमाण है :

संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥
तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥
(पन्ना ४९)

वास्तव में मालिक के देश जाने हेतु जीव के लिए राहदारी अर्थात् रास्ते का खर्चा केवल और केवल इस जगत में उसके द्वारा संग्रह किया गया नाम-धन ही है। बाकी एक पाई भी उसके साथ नहीं जाती चाहे वह अरबों-खरबों की संपत्ति का मालिक ही क्यों न हो। गुरबाणी हमें नाम-धन-संचय की प्रेरणा देती है :

जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥
जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥
सो सुखु साधू संगि परीति ॥
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥
सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥

इस असटपदी की दूसरी पउड़ी में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर के नाम के खज़ाने को समस्त खज़ानों से श्रेष्ठ

बताते हुए जीव को प्रभु-नाम का ही आसरा लेने के लिए प्रेरित किया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे जीव! जिस धन की चाहत में तू चारों दिशाओं में दौड़ता फिरता है वह धन तुझे हरि की सेवा से प्राप्त हो जायेगा। हे मित्र! जिस सुख की प्राप्ति की ख्वाहिश तेरे भीतर नित्यप्रति बनी रहती है वह सुख तुझे संतों की संगत करने से प्राप्त होगा। जिस शोभा (कीर्ति) की खातिर तू नेक कर्म करता है उसकी प्राप्ति हेतु तुझे परमेश्वर की शरण में ही जाना होगा। अनेक उपाय करने से भी तेरा (विकारों का) रोग नहीं मिटता। वह रोग मिटता है प्रभु-नाम की औषधि लगाने से। कहने से तात्पर्य कि अहंकार और आवागमन जैसे भयावह रोग अनेक उपक्रमों से दूर नहीं होते। ये दूर होते हैं प्रभु-नाम का जाप करने से। समस्त दुनियावी खज़ानों में से परमेश्वर का नाम रूपी खज़ाना सर्वश्रेष्ठ खज़ाना है। गुरु पातशाह हिदायत करते हैं कि इसलिए परमेश्वर का नाम जपने का अभ्यास करो। यही मालिक की दरगाह में कबूल होगा।

गुरु पातशाह उपरोक्त पउड़ी में समझाते हैं कि हे दुनिया के लोगो! ध्यान दो कि सर्वोत्तम खज़ाना परमेश्वर नाम ही है। जिसके पास यह खज़ाना होता है वही प्रभु-दर पर स्वीकृत हो सकता है। सच्चा धन केवल नाम-धन ही है। रोगों से मुक्ति, विकारों से हमेशा के लिए छुटकारा पाकर सच्ची शांति, सदा कायम रहने वाला सुख तो केवल नाम रूपी औषधि से ही मुमकिन है। गुरबाणी में अन्यत्र भी हरि-नाम को औषधि बताया गया है जो न केवल विकारों से मुक्ति दिलाता है अपितु आवागमन से भी मुक्त कर देता है। गुरबाणी में गुरु की महिमा का गान करते हुए हरि-नाम रूपी औषधि के प्रदाता अर्थात् देने वाले को वास्तविक वैद्य माना है :

मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥ (पन्ना ६१८)

अर्थात् मेरा वैद्य प्रभु ही है। वह अपने नाम की औषधि मेरे मुख में डालता है और यम के फंदे को काट देता है। सभी खज़ानों में से प्रभु-नाम का खज़ाना श्रेष्ठ खज़ाना है। इसी से जीव के लोक-परलोक सफल होते हैं। जिस पर मालिक की रहमत होती है उसे ही यह सर्वोत्तम दात नसीब होती है।

मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥
ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥
कलि ताती ठांढा हरि नाउ ॥
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥
भगति भाइ आतम परगास ॥
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥

तीसरी पउड़ी में गुरु साहिब ने जीव को अपने मन को प्रबोधित (सुचेत) करने हेतु प्रेरित किया है कि किस प्रकार दस दिशाओं में भटकते हुए मन को हरि-नाम-सिमरन से जागृत करना है। कलयुग की तुलना अग्नि से करते हुए, नाम को शीतल जल की संज्ञा देते हुए समझाया है कि कलयुगी प्रभाव को नाम-जल की शीतलता से दूर करके ही सच्चा सुख प्राप्त किया जा सकता है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे भाई! अपने मन को परमेश्वर के नाम से जागृत करो अर्थात् अज्ञानता की गहरी नींद में सोये हुए मन को

हरि के नाम द्वारा सुचेत करो, जिसके फलस्वरूप दस दिशाओं में भटकता हुआ (चंचल) मन ठिकाने पर आ जाये, स्थिर हो जाये। जिस हृदय-घर में परमेश्वर का निवास है, उसके मार्ग में किसी तरह का कोई विघ्न नहीं आता। कलयुग प्रचंड आग है। (कलयुग विकारों से परिपूर्ण है। ये विकार जीव को हर पल जला रहे हैं, व्याकुल कर रहे हैं।) प्रभु का नाम शीतल जल है। प्रभु का सिमरन करो और सदा सुखी रहो। प्रभु के सिमरन की बरकतों से समस्त भय दूर हो जाते हैं और आशा पूर्ण हो जाती है। प्रेम एवं प्रभु की भक्ति द्वारा आत्मा के अंदर निर्मल ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। ऐसे हृदय-घर में अविनाशी प्रभु आकर बस जाता है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि नाम जपने से यमों की फांसी (फंदा) सदा के लिए कट जाती है।

संसार के जीव मोह-माया में गलतान हुए किसी गहरी नींद में सोये रहते हैं। विषय-विकारों की बहुतायत जीव की आत्मिक पूंजी को नष्ट कट देती है। गुरु पातशाह ने अचेत मन को प्रभु का सिमरन करके सुचेत करने की प्रेरणा दी है अन्यथा यह दुर्लभ जीवन बर्बाद हो जायेगा और जीव के हाथ पछतावा ही शेष रहेगा। इस पउड़ी में एक गूढ़ तथ्य भी उजागर किया गया है, जैसा कि सातवीं पंक्ति में है-- *"भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥"* इसका भाव है कि भय मिट जाता है और आशा पूर्ण हो जाती है। चिंतकों के चिंतनानुसार इस पंक्ति पर थोड़ा विचार करने का प्रयास करें। प्रभु के भय में रहने से जीव दुनियावी भय से मुक्त हो जाता है तथा प्रभु-सिमरन की बरकत से उसकी इच्छाएं खत्म हो जाती हैं। सच्चा सुख इच्छाओं से रहित होने में है न कि इच्छाओं की पूर्ति में। जीव की इच्छाएं जितनी ज्यादा होंगी उसके दुखों का दायरा भी उतना ही विस्तृत होता जायेगा। वास्तविक सुख इच्छाओं के संकोच में है क्योंकि इच्छाएं आग में घी का काम करती हैं। भाग्यशाली हैं वे जिन्हें यह तथ्य समझ में आ गया है। वे तो बस, एक ही अरदास करते हैं, एक ही मांग रखते हैं :

सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥
गुर का सिखु वडभागी हे ॥ (पन्ना २८६)

इस भटकते हुए मन पर प्रभु-नाम का अंकुश लाज़मी है। चौथे पातशाह की पावन बाणी में संदेश है कि हर पल इधर-उधर दौड़ते मन का निवास मूल स्वरूप में नहीं होता। शबद-गुरु का अंकुश ही इसे निज स्वरूप में स्थिरता प्रदान करता है :

मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ ॥
गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ ॥१॥ (पन्ना ११७९)

वास्तव में हृदय रूपी घर में ही कीमती रत्न, माणिक और लाल भरे पड़े हैं। भटकता हुआ मन इन्हें खोज नहीं पाता। सच्चे गुरु के माध्यम से ही इन्हें खोजा जा सकता है :

घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ ॥ . .
जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥ (पन्ना ११७९)

भटकता हुआ मन और विकारों की अग्नि में दग्ध (जलता) हृदय हरि-नाम से शांत होकर निज स्वरूप की पहचान कर सकता है। हरि-नाम प्राप्त होता है पूर्ण गुरु की कृपा से।

ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥
जनमि मरै सो काचो काचा ॥
आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥

आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥
अनिक उपाव न छूटनहारे ॥
सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥
हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥

चौथी पउड़ी में पंचम पातशाह जी ने जीव को पांडित्यपूर्ण आडंबरों से बचकर, पूर्ण गुरु के दर्शाये मार्ग पर चलकर सहज भाव से प्रभु की भक्ति करने की प्रेरणा की है। साथ ही समझाया है कि स्वयं प्रपंचों में पड़े हुए उपदेशक ने जीव का उद्धार नहीं करना है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर तत्त रूप अर्थात् सत्य स्वरूप है, सार पूर्ण है। सार पूर्ण, तत्त रूप परमेश्वर की जो विचार (चिंतन) करता है वह भी सच्चा है। जो जन्म-मरण के चक्करों में पड़ा है, वह झूठा है। कहने से अभिप्राय, तत्त रूप परमेश्वर का नाम जपकर उसी में लीन हो जाते हैं; उसी का ही रूप हो जाते हैं। दुनियावी झूठे पसारे में फंसे चिन्तातुर लोग आवागमन के चक्कर में पड़े कच्चे तथा झूठे ही समझो! पारब्रह्म की सेवा, बंदगी से आवागमन का चक्कर मिट जाता है इसलिए आपा-भाव (मैं, मेरी) छोड़कर गुरु की शरण में जाना चाहिए ताकि हउमै को त्यागकर प्रभु की बंदगी हो सके। इस प्रकार (गुरु की शरण में जाने से) रत्न सदृश्य यह बेशकीमती जीवन सफल हो सकता है। प्राणों के आधार परमेश्वर का सिमरन करना इसी लिए परम आवश्यक है। प्रभु-सिमरन के बिना किये गये अनेक साधनों, यथा-- स्मृतियां, वेद-शास्त्र आदि के पठन एवं विचार-मात्र आदि से भवसागर से छुटकारा मुमकिन नहीं। चित्त लगाकर अर्थात् एकाग्रचित्त होकर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में समझाते हैं कि ऐसा करने से अर्थात् प्रभु-नाम की आराधना मन लगाकर करने से मनोवांछित फल (मोक्ष) की प्राप्ति हो जाती है।

उपरोक्त पउड़ी में यह तथ्य उजागर होता है कि परमेश्वर का नाम ही सार पूर्ण है, अतः लगभग समस्त धर्म-ग्रंथ परमेश्वर के नाम-सिमरन से ही मुक्ति की प्राप्ति मानते हैं। वास्तव में नाम के तुल्य अन्य कोई साधन नहीं है। गुरु की शरण में आने से ही यह तथ्य स्पष्ट होता है कि हउमै को त्यागकर, एकाग्रचित्त होकर प्रभु-भक्ति करने से प्रभु से मिलाप हो जाता है अन्यथा जीव कर्मकांडों में उलझकर आवागमन के चक्करों में ही फंसे रहते हैं। सार पूर्ण को ग्रहण करने का उपदेश चिंतकों के चिंतनानुसार सूप (छाज) से तुलना करके इस प्रकार समझाया गया है जैसे अनाज को साफ करने के लिए उसे फटकारा जाता है। सार पूर्ण अनाज उसके अंदर रह जाता है, तिनके अथवा थोथे अनाज के दाने आदि बाहर निकल जाते हैं। ठीक ऐसे ही साधु का स्वभाव होता है। वह संसार में रहते हुए सार पूर्ण विचार को ही ग्रहण करता है, असार (निरर्थक) को अंदर प्रवेश ही नहीं करने देता।

गुरबाणी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि परिवार-समाज में विचरण करते हुए, दुनियावी कार्य-व्यवहार करते हुए हमें अपने चित्त को परमेश्वर से जोड़ कर रखना है तथा संसार रूपी भवसागर में कमल सदृश्य खिले रहना है।

ख़बरनामा

यूबा सिटी में स्थापित होने वाले सिक्ख सेंटर सम्बंधी हुई एकत्रता

श्री अमृतसर : ३१ अक्तूबर : शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा अमेरिका में स्थापित होने वाले सिक्ख सेंटर के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की एकत्रता कैलेफोर्निया के प्रमुख शहर यूबा सिटी में हुई, जिसमें शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के सहयोग से बनाए जा रहे सिक्ख सेंटर की रूप-रेखा का एलान किया गया। इस एकत्रता में जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अलावा स. दीदार सिंघ (बैंस) खज़ानची, स. रघूजीत सिंघ वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. सुखदेव सिंघ भौर महासचिव, स. रजिंदर सिंघ महिता कार्यकारिणी सदस्य तथा स. परमजीत सिंघ अतिरिक्त सचिव शामिल थे।

यूबा सिटी में स्थापित होने वाले सिक्ख सेंटर सम्बंधी हुई एकत्रता में लिए गए निर्णय के बारे में जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने बताया कि अमेरिका तथा कनाडा की सिक्ख संगत की मांग के अनुसार यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब भवन बनाया जाएगा। इसमें सत्कार सहित श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप तथा अन्य गुरमति साहित्य रखा जाएगा। उन्होंने बताया कि संगत को गुरमति का ज्ञान हासिल करवाने के लिए समय-समय पर पाठ-बोध समागम तथा सेमीनार भी करवाए जाएंगे। बच्चों को पंजाबी की पढ़ाई के लिए प्रेरित कर रविवार के स्कूलों की सहायता की जाएगी। उन्होंने बताया कि ऑनलाईन गुरमति कोर्स भी इस सेंटर से चलाए जाएंगे जिनका पाठयक्रम तथा अन्य प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी करेगी। इस सेंटर में ग्रंथी, कथावाचक तथा प्रचारक कोर्स करवाने के लिए गुरमति विद्यालय भी खोला जाएगा। उन्होंने कहा कि सिक्ख सेंटर की तैयारी की देख-रेख करने के लिए स. चरनजीत सिंघ (बैंस) को जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस सेंटर के कानूनी सलाहकार का कार्य स. जसप्रीत सिंघ को सौंपा गया है। उन्होंने बताया कि इंटरनेशनल सिक्ख सेंटर आधुनिक तकनीकों से लैस होगा।

सिक्ख नसलकुशी के पीड़ितों को इंसाफ मिलने तक हर वर्ष अरदास समारोह हुआ करेगा

श्री अमृतसर : ३ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा है कि जितनी देर तक दिल्ली के सिक्ख नसलकुशी साके के पीड़ित लोगों को इन्साफ एवं दोषियों को सख़्त सज़ाएं नहीं दी जातीं शिरोमणि गु. प्र. कमेटी हर वर्ष अरदास समागम करवाएगी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि असल इन्साफ तभी होगा जब कातिलों व उनको शह देने वालों को सख़्त सज़ाएं दी जाएंगी। उन्होंने कहा कि गत ३० वर्षों से अपनों के बिछुड़ने का दर्द झेल रहे सिक्ख नसलकुशी के पीड़ित लोग इन्साफ के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उन्होंने केंद्रीय सरकार को अपील करते हुए कहा कि पीड़ित परिवारों के जख़्म तभी भरेंगे जब उनके परिवारों पर हमला करने एवं करवाने वालों को सख़्त सजाएं दी जाएंगी। उन्होंने कहा कि नवंबर १९८४ का सिक्ख नसलकुशी साका बहुत ही घिनौना एवं शर्मनाक काम था, जिसको भुलाना सिक्खों के वश में नहीं। अफसोस है कि जिन लोगों ने इस दुर्भाग्यपूर्ण साके को अंज़ाम

दिया उनको सज़ा देने की बजाए बड़े-बड़े ओहदों पर विराजमान किया गया।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने श्रीनगर के लिए राहत-सामग्री के ग्यारह ट्रक रवाना किए

श्री अमृतसर : ७ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने जम्मू-कश्मीर के बाढ़-पीड़ितों की सहायता को निर्विघ्नता सहित जारी रखते हुए स्थानीय भाई गुरदास हॉल से श्रीनगर के लिए राहत-सामग्री से भरे ग्यारह ट्रक रवाना किए।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सिक्खी सिद्धांत के अनुसार सदैव मानवता की सेवा में बिना किसी भेदभाव के तत्पर रहती है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में आई भयानक बाढ़ के दौरान शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने पहले दिन से ही वहां के लोगों की बढ़-चढ़कर सेवा की तथा श्रीनगर में गुरुद्वारा शहीद बुंगा साहिब (बडगाम) में राहत कैंप शुरू किया जो ९ सितंबर से लगातार सेवाएं प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए फ्री मेडिकल कैंप भी चल रहा है। उन्होंने बताया कि मौसम तबदील हो रहा है तथा शीत ऋतु बहुत तेजी से आ रही है। इसको मुख्य रखते हुए राशन-सामग्री के अतिरिक्त ३००० गर्म बिस्तर भी भेजे गए हैं। उन्होंने बताया कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कार्यकारिणी सदस्य तथा अधिकारी जल्द ही श्रीनगर जाकर बाढ़-पीड़ित सिक्ख परिवारों के लिए रखी गई २ करोड़ रुपए की राशि बांटेंगे।

इस अवसर पर स. दलमेघ सिंघ, स. रूप सिंघ, स. मनजीत सिंघ तथा स. सतबीर सिंघ सचिव, स. दिलजीत सिंघ, स. परमजीत सिंघ तथा स. महिंदर सिंघ अतिरिक्त सचिव के अलावा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अन्य अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण मौजूद थे।

अमेरिका के गुरुद्वारा गुरु नानक सिक्ख मिशन में लगी आग दुर्भाग्यपूर्ण घटना : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १३ नवंबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने अमेरिका के गुरुद्वारा गुरु नानक सिक्ख मिशन में लगी भयानक आग को दुर्भाग्यपूर्ण घटना बताया है। उन्होंने कहा कि इस घटना के पश्चात देश-विदेश के समूह सिक्ख गहरे शोक में हैं।

उन्होंने कहा कि गुरु-घर सबके सांझे होते हैं तथा यहां बिना किसी जात-पात, ऊंच-नीच, भेदभाव के हर व्यक्ति श्रद्धा-भावना से माथा टेकने के लिए आ सकता है। उन्होंने अमेरिका की सरकार को अपील करते हुए कहा कि इस घटना की जांच करवाई जाए। दोषी लोगों को कानून के अनुसार तुरंत सख़्त सज़ा दी जाए ताकि आगे से कोई भी व्यक्ति ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना को अंज़ाम न दे। उन्होंने देश-विदेश की समूह गुरुद्वारा कमेटियों से कहा कि रात के समय हर गुरु-घर में ग्रंथी सिंघ या सेवादार का हर समय रहना ज़रूरी बनाया जाए।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१२-२०१४